शिवोम् वाणी

षष्ठम् खण्ड

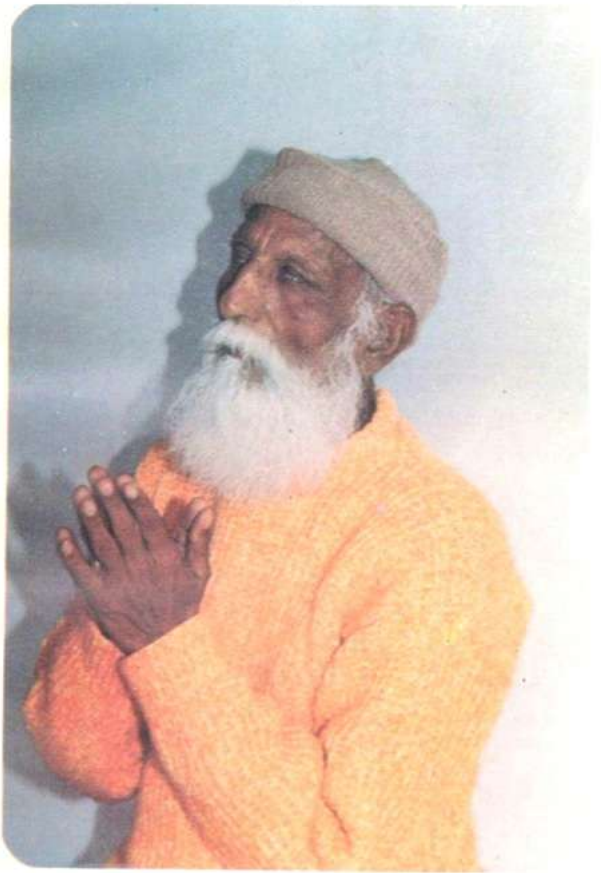

■ स्वामी शिवोम् तीर्थ

शिवोम् वाणी

षष्ठम् खण्ड

■ स्वामी शिवोम् तीर्थ

शिवोम् वाणी

प्रकाशक :

श्री नारायण कुटी-न्यास

संन्यास आश्रम, देवास (म.प्र.) पिन-
455001

प्रथम संस्करण- *1994*

प्रति 3000

सर्वाधिकार प्रकाशक के सुरक्षित

फोटो कम्पोजिंग
स्टार कम्प्यूटर एण्ड ग्राफिक्स 4/1, नयापुरा, इंदौर
मुद्क-
निजानंद ग्राफिक्स संवाद नगर, इंदौर

मूल्य *10*/- रुपये

भूमिका

श्री गुरुदेव के आध्यात्मिक भजनों का प्रस्तुत संग्रह शिवोम् वाणी षष्टम् खण्ड समर्पित करते हुए जिस प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है, उसे व्यक्त कर पाना आसान नहीं है। कृपासिंधु, भक्त-वत्सल जब-जब जगत जीवों पर करुणा से द्रवित हो अपनी अहेतु की कृपा करते हैं, तब साधना के दिव्य,पावन क्षणों में अन्तस से गौमुखी गंगा की तरह स्फुरित होकर ये भजन नाद से शब्द रूप में अवतरित होते हैं। 'नाद ब्रह्म' के प्रकटीकरण का ही यह एक क्रम है। कभी अनहद तो कभी कई अनन्त रूपों में प्रकट होकर, शब्द का आकार ग्रहण कर, स्वर-ताल में बँधकर कल-कल ध्वनि से निनादित होते हुए पुनः आकाश में समाहित हो जाते हैं। ये आकाश भी अनन्त हैं। जैसा कि सभी जानते हैं कि ये भजन शब्द रूप में आने पर अपनी धुन भी साथ लिए होते हैं। इन गीतों की गंगा में अनेक साधकों को डूबते-उतराते देखने का सौभाग्य बहुत लोगों को प्राप्त हुआ है। केवल मूक दर्शक बनकर- 'हौं बौरी डूबन डरी, रही किनारे, बैठि' की उक्ति को चरितार्थ करने की नादानी पर 'सु-धी' जन अवश्य क्षमा करेंगे ऐसी आशा है।

श्री गुरु महाराज ने इन भजनों में कभी तो साधक-भक्तों के विषयासक्त, मलावृत्त एवं तमसाच्छन अंतस का यथार्थ दर्शन कराया है, तो कभी जगत प्रवाह से जूझते भक्तों के दैन्य को करुणा से कातर आत्म-निवेदन के रूप में करते प्रस्तुत हुए साधक की विवशता, छटपटाहट और आराध्य से मिलन की तड़प को स्वर दिया है। कहीं परम् गुरुदेव के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव व्यक्त हुआ है, तो कहीं अभेदावस्था की उच्चतम स्थितियों की झलक भी है। अधिकांश भजनों में शक्तिपात के गूढ़ रहस्यों को अत्यंत ही सहज रूप में उद्घाटित कर संसारी जीवों पर अनुग्रह ही किया

है। काव्य शास्त्रीय ग्रन्थों में श्रव्य के दो भेदों का उल्लेख मिलता है- प्रबंध और मुक्तक, प्रबंध काव्य में जहाँ एक ओर सानुबंध कथा चलती है तो वहीं दूसरी ओर मुक्तक काव्य मुक्त होता है, उसमें पूर्वापर का कोई सम्बन्ध नहीं होता। इसका आकार संक्षिप्त होते हुए भी यह अपने आप में पूर्ण होता है। काव्य शास्त्र के मनीषियों ने मुक्तक काव्य के भी दो भेद किये हैं- पाठ्य और गेय। गेय मुक्तक गीति काव्य कहलाता है। प्रस्तुत संग्रह के मुक्तक अपने आप में पूर्ण होकर मुक्त तो हैं ही, गेय भी हैं और साथ ही साथ मुक्ति पथ के पथ प्रदर्शक भी। सच तो यह है कि इन भजनों में प्रत्येक साधक के लिए मात्र अंगुली निर्देश न होकर भुजाओं का सहारा भी है।

संतों का व्यक्तित्व सार्वजनीन, सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक ही नहीं, अपितु इससे भी परे होता है, तभी तो भाषा, भाव, विचार एवं अनुभूति के अत्यंत ही अल्प हमारे छोटे-छोटे स्थूल पैमाने व्यर्थ सिद्ध होते हैं। नापना तो दूर रहा, कभी-कभी तो गूढ़ अभिव्यक्तियों का स्पर्श भी नहीं कर पाते। तभी तो जगत की ज्वालाओं से झुलसे जीवों के कल्याणार्थ परब्रह्मस्वरूपा परावाणी को करुणा-स्नात-वाणी के रूप में सहज, सरल एवं सुबोध होकर प्रकट होना होता है।

■ **गुरु चरण धूलि**

१. सुन लो अर्ज हमारी १
२. तूफ़ान में फंसी हूं १
३. मेरे प्रभु तू आजा २
४. प्रभु माखन स्वीकार ३
५. हम आए दर पह तेरे ३
६. मुझ पर नज़र कृपा की ४
७. आ जा तू मेरे प्रियतम ४
८. श्याम तूने कर्तब बहुत ५
९. नाथ मोहे लीजो आय ६
१०. प्रियतम टेर सुनो ६
११. तुमको छोड़ कहाँ मैं ७
१२. तुझे तरस न आए ७
१३. मन मैला है मेरे ८
१४. माया से पर मेरा ९
१५. अब तेरे दर पर खड़ा ९
१६. तुम कृपा करत हो १०
१७. मैं तो खड़ी हूं १०
१८. मोरे प्रियतम अर्ज ११
१९. अब तो हर पल ११
२०. श्याम तू रंगत १२
२१. श्याम तेरी टेढ़ी चाल। १३
२२. मन मेरे की तो १३
२३. आओ पीर मिटा जाओ १४
२४. मैं तो अपने श्याम की १४
२५. तुम अपना मुझे बना लेना १५
२६. श्याम नहीं तुम आए १५
२७. मैं क्या खोलूँ तेरे आगे। १६
२८. प्रियतम डूबी जात रही। १६
२९. अब विनय सुनो दुखियारी १७
३०. राम लीजो मोहे उठाए १८
३१. अब चले आओ १८
३२. आन जगाओ मोहे १९
३३. मैं पुकारूँ हूँ तेरे १९
३४. मैं तो श्याम को मनाऊँगी २०
३५. मैं दर्शन मांगूँ २१
३६. मैं तो उलझा बीच जगत २१
३७. तेरे लिए तो क्या कठिन २२
३८. कठिन चढ़ाई तेरे घर की २२
३९. हे मेरे बालमा २३
४०. हे मेरे राम बचा लो २४
४१. मेरी अक्खियाँ तेरे राह २४
४२. प्रभु क्यों मोहे बिसार २५
४३. मच्छली तड़पे नीर बिना २५
४४. मैं राम कहाँ पाऊँ २६
४५. हूँ शक्तिहीन प्रभु मेरे २७
४६. कैसे मैं समझाऊँ तुमको २७
४७. अब मोहे ऊबारो राम २८
४८. प्रभु खोलो बंद किवाड़े २९
४९. नारायण गोविन्द माधव २९
५०. मन मेरा विक्षप्त रहता ३०
५१. हूं तेरे दर आया ३१
५२. प्रभुजी, मेर तेर से थाकी ३१
५३. अपनी शरण में राखो ३२
५४. प्रभुजी तुमरी ओर ३२
५५. हे मन प्रभु की शरण गहो ३३
५६. विनय तुम्हारे चरणों ३४
५७. प्रभु मेरा हिरदय ३४
५८. मैं चलता चलता ३५
५९. तुम जानत प्रभु ३५
६०. दीनानाथ बचा लो ३६
६१. राम मोह यह वरदान ३७
६२. प्रभु मो पे यह ३७
६३. दीन दयाला ३८
६४. प्रभु यह ही विनती ३९

६५. मैं सिसक रही ३९
६६. हरदम दर्शन ४०
६७. हे अशरण शरण ४०
६८. अब तो हूं मैं ४१
६९. गहर गंभीर हो ४२
७०. मैं तो श्याम को ४२
७१. नादिया किनारे मैं ४३
७२. मीरा बनाओ मुझको ४३
७३. प्रभु मेरे बंधन ४४
७४. तेरे चरणों में ४४
७५. प्रभुजी चरण धूलि ४५
७६. गुणगान करूँ ४६
७७. क्रोध लोभ को ४६
७८. प्रभु मेरे हिरदय ४७
७९. मन तड़पे और ४७
८०. प्रभुजी तेरा एक ४८
८१. हे श्याम सुंदर ४८
८२. हे समर्थ दाता ४९
८३. मैं आयो शरण ५०
८४. मैं आशा करते ५०
८५. चरणों में रहने ५१
८६. मैं करत पुकार ५१
८७. अब तो मैं द्वारे ५२
८८. तीर्थ विष्णु प्रभु ५३
८९. काल न देखे ५३
९०. हो री कोई ऐसा ५४
९१. राम करि किरिपा। ५४
९२. सद्गुरु किरपा कीनी ५५
९३. भ्रम में डूबा ५६
९४. हरि ने जीव ५६
९५. परम दयालु ५७
९६. माया सघन होत ५७
९७. गुरु बिन ५८
९८. जनम मरन में ५८
९९. गुरुदेव मेहर ५९
१००.न कोई जग में ६०
१०१.लोग कहें तीरथ ६०
१०२.जय गुरुदेव जय ६१
१०३.मैं गुरु चरनन ६१
१०४.जब कृपा करी ६२
१०५.गुरु कृपांजन ६३
१०६.गुरुदेव सहारा तेरा ६३
१०७.धारूँ चरण कमल ६४
१०८.मातंगी है जागी ६४
१०९.गुरु कृपा जब ६५
११०.गुरु ऐसे बलिहारी ६५
१११.जब से चरणीं ६६
११२.गुरु सम जग में ६६
११३.गुरुदेव नहीं तुमरे ६७
११४.प्रियतम सदा सत्य ६८
११५.मेरे कलेजड़े में ६८
११६.सो ही तप है ६९
११७.मैं सद्गुरु पाया ६९
११८.गुरु सेवा में राहत ७०
११९.गुरु बाण चलाया। ७०
१२०.गुरु प्रेम में ७१
१२१.मैं सद्गुरु के ७१
१२२.गुरु साचा भ्रम ७२
१२३.मेरे सद्गुरु दीपक ७३
१२४.विष्णु तीर्थम ७३
१२५.जय विष्णु तीर्थ ७४
१२६. गुरुदेव न भूलाना ७५

विनय

(१)

१. सुन लो अर्ज हमारी, हम द्वार पह खड़े हैं।
हो जाए किरपा हम पर, हैं दर पह हम पड़े हैं।
२.तुम ही विनय सुनोगे, तुम ही कृपा करोगे।
है दूसरा न कोई, हैं दर पह हम पड़े हैं।।
३.तुम दीन हो दयाला, हम सा न दीन कोई।
अपनी विरद सम्भालो, हैं दर पह हम पड़े हैं।
४.सुन कर सुयश तुम्हारा, हम आस ले के आए।
इनकार तुम न करना, हैं दर पह हम पड़े हैं।
५.भटके बहुत हैं जग में, न कोई सुनने वाला।
अब दर पह तुमरे आए हैं, दर पह हम पड़े हैं।
६.शिव ओम् यह पुकारे, सुन लो अर्ज हमारी।
हम दीन हीन बालक, हैं दर पह हम पड़े हैं।

(२)

१. तूफान में फंसी हूं, मारग न कोई सूझे।
कैसे मिले सहारा, कुछ बात मन न बूझे॥
२. रैदास तुलसी मीरा, तुमने अनेकों तारे।
बेड़ा भी पार मेरा, मुझको तो कुछ न सूझे॥
३. अंध्यारी रात गहरी, वायु भी तेज़ बहती।
घनघोर वर्षा होती, जाना कहां न सूझे॥

४. हैं पाओं मेरे सूजे, मुझसे चला न जाए।
कैसे बढ़ूं मैं आगे, कैसे व क्या न सूझे ॥
५.करती चरण में विनय, शिव ओम् मैं पुकारूं ।
मुझको न कुछ भी सूझे, तेरी शरण ही सूझे ॥

(३)

१. मेरे प्रभु तू आ जा, मन में मेरे समा जा ।
मैं खोजता तुझे हूं, मन में तू मेरे आ जा ॥
२. चंचल यह मन है मेरा, यह मैला मन है मेरा ।
कैसे पुकारूं तुझको, फिर भी तू आ जा आ जा ।।
३.है ढूंढे तुझको दुनिया, मतवाली तेरी दुनिया ।
न देखो ऐब मेरे, मन में भरे हुए हैं।
४.मैं भी तेरा दीवाना, छा जा तू मन में आ जा ॥
तुझको न ऐब घेरें, तू कर कृपा तू आ जा ॥
५.तेरी तो यह अदा है, दीनों को पार करना ।
उद्धार कर भी मेरा, उद्धार करता आ जा ।।
६.शिव ओम यह पुकारे, तुझ को विनय करत है ।
सुन भी लो टेर मेरी, आ जा प्रभु तू आ जा ॥

(४)

१. प्रभु मन माखन स्वीकार करो।

धोय बिलोय है राखा मैंने, आप उसे स्वीकार करो ।।

२. कोमल शुद्ध बनो, जग न्यारा, है विनम्र अति भारी।

लेयो लगाए भोग माखन को, आप उसे स्वीकार करो ।।

३.ध्यान भजन और सेवा करके, मैंने इसे सुधार लिया।

अब तो निर्मल माखन बनयो, आप उसे स्वीकार करो ॥

४. तीर्थ शिवोम् मैं अर्ज गुजारूँ, मन तेरे चरणों में है।

यह मन अपने माही समेटो,आप उसे स्वीकार करो ॥

(५)

१.हम आए दर पह तेरे, मन आस हैं लिए हैं।

हम पह कृपा हो तेरी, विश्वास यह लिए हैं ।।

२. मन है नहीं तो ऐसा, जो भीख मांगे तुझसे।

फिर भी है यह भरोसा, तेरी कृपा लिए हैं ।।

३.तेरी कृपा लिए ही, हम तेरे दर पह बैठे।

सुन लो विनय हमारी, हम तो कृपा लिए हैं ।।

४.करना जो चाहो किरपा, तो हम पह कर ही देना।

किरपा लिए तो हम हैं, हम हैं कृपा लिए हैं ।।

५.तेरी कृपा हो हम पर, तेरी कृपा ही मांगें।

तेरी कृपा के आश्रित, जीवन कृपा लिए है ॥

६.शिव ओम् यह विनय है, कर बद्ध यह विनय है।

बस हम पह किरपा कीजो, तेरी नज़र लिए हैं ।।

(६)

१.मुझ पर नजर कृपा की हो जावे ।
बंधन छूटें माया सब ही, जीवन सुंदर हो जाए ।
२.मस्त रहूँ मैं तेरे प्रेम में, माया मोह हटे मन से ।
छका रहूं हर दम मतवाला, मस्त ही जीवन हो जाए ॥
३.तेरा कुछ भी बिगड़त नाहीं, एक जीव के तारे से ।
कृपा दृष्टि ही मेरा सम्बल, दूर सभी दुख हो जाए ॥
४.सीमाएं सब तोड़ जगत की, आगे बढ़ूं अनन्त की ओर ।
विघ्न सभी तब कट जाएंगे, सेवक पार जो हो जाए ।।
५.तीर्थ शिवोम् कृपा प्रभु कीजो, आया हूं मैं तेरे द्वार ।
मन की विपदा हर लो मोरी, दर्शन तेरा हो जाए ॥

(७)

१.आ जा तू मेरे प्रियतम, सुन ले मेरी कहानी ।
पल भर है चैन नाहीं, बीते है ज़िन्दगानी ॥
२.मन से दुखी बहुत हूं, करता है अत्याचारा ।
कुछ भी नहीं है मानत, करता बहुत है हानी ॥
३.भोगों में मन लगा है, जग प्रिय भासता है
समझाऊं उसको कुछ भी, करता है वह नदानी ॥
४.अंतर जगत जो बैठा, उकसाए वह जगत को ।

वैसे ही भोग आते, बदहाल है जवानी ॥

५.जग कूप में पड़ी हूं, कोई न मेरी सुनता ।

किसको सुनाऊं जाकर सुन ले मेरी कहानी ॥

६.शिव ओम् तुम ही रक्षक, चरणों में आ गिरी हूं ।

मुझको बचा ले प्रियतम, यह ही मेरी कहानी ।।

(८)

१.श्याम तूने कर्तब बहुत दिखाए ।

अग्नि वायु जगत पसारा, क्या क्या खेल रचाए ॥

२.तेरा खेल जगत से न्यारा, जग तो केवल माया ।

तेरी लीला तू ही जाने, देखत मन भरमाए ।।

३.समझन चाहे जीव जो इसको, समझ नहीं कुछ पाता ।

तेरा खेल है अजब अलौकिक, समझ में ना ही आए ।।

४.जिस पर तेरी किरपा होती, जान वही है पाता ।

जो तुझको जानत पहचानत, रूप तेरा हुई जाए ॥

५.तीर्थ शिवोम् शरण में आया, मैं कुछ जानत नाही ।

मुझको एक भरोसा तुमरा, तुम ही में मन जाए ।।

(९)

१.नाथ मोहे लीजो आय उबार ।

कब का पंथ कृपा का देखूं, कीजो मोहे पार ॥

२.नयन निहारत तेरा रस्ता, रहते वहीं जमे हैं ।

अब तो मो पर किरपा कीजो, पड़ा हूं तुमरे द्वार ॥

३.पड़ा हुआ हूं भवसागर में, रहा पुकारत तोहे ।

वेग करो हे मेरे प्रियतम, डूब रहा मंझधार ॥

४.मैं हूं शरण तुम्हारी प्रभु जी, दूजा कोई न दीखे ।

दीन हीन हूं, मैं हूं बालक, दीखत आर न पार ।।

५.हे प्रभु दीन दयाला गिरधर, तेरा एक भरोसा ।

जान अनाड़ी मो को तारो, करता तुम्हें पुकार ॥

६.अशरण शरण सुनो भगवन्ता, शिव ओम् पड़ा चरणों में

पत राखो और लाज बचाओ, पतित उधारन हार ।।

(१०)

१.मेरो मन अकुलाए रह्यो है, प्रियतम टेर सुनो।

मैं रही पुकारत तोहे, मेरी अर्ज सुनो ॥

२.मेरा मन तुमरे संग राता, दूजो नाहीं भाए ।

मैं रही बुलावत तोहे, मेरी अर्ज सुनो ॥

३.अंग-अंग में प्रेम समाया, रंग चढ़ो है न्यारा ।

मन लोचे है दर्शन ताईं, मेरी अर्ज सुनो ॥

४.तीर्थ शिवोम् शरण में आई, दर्शन मोहे दीजो ।

मैं दुखियारी दर्शन बाझों, मेरी अर्ज सुनो ।

(११)

१.तुम को छोड़ कहां मैं जाऊं ।

तेरे सम है दूजा नाहीं, कैसे दूजा ध्याऊं ॥

२. दूजे के दुख दुखी जो होवे, ऐसा है को नाहीं ।

अपना दुखड़ा किसके आगे, जाकर उसे सुनाऊं ।।

३.अपने सुख में जग है लागा, दूजे का दुख नाहीं ।

ऐसे जग को कहकर विरथा, अपना भरम गंवाऊं ॥

४.तुम ही एक हो मेरे अपने, है दूजा को नाहीं ।

एक भरोसा तेरा प्रभुजी, तुम पह ही कह पाऊं ॥

५.तुम हो अंतर्यामी ऐसे, अंतर की जानत हो ।

अपने मुख से काहे बोलूं, कैसे कह मैं पाऊं ॥

६. तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, तुम पह आस लगी है।

चाहे मारो चाहे तारो, तुम पह ही मैं आऊं ॥

(१२)

१. तुझे तरस न आए प्रियतम, दुखिया नारी पर ।

मैं बिरह व्याकुल फिरती, दुख की मारी पर ॥

२. कृपा की वर्षा कब हो मो पर, यह ही राह निहारूं ।

अब तो तरस खाओ मेरे प्रियतम, इस दुखियारी पर ।।

३. डोलत फिरती वन-वन, पग-पग, मारग कोई न सूझे ।

तुमरी किरपा एक ही मारग कर दुखियारी पर ॥

४. तेरे दर्श बिन मन न लगता, रो रो रैन बिताऊं ।

करो कृपा है प्रियतम अब तो, मैं मतिमारी पर ॥

५.तीर्थ शिवोम् हूं भई बावरी, मन है वश में नाहीं ।

कौन समय प्रभु मेघ बरस है, अबला नारी पर ॥

(१३)

१.मन मैला है मेरे प्रभु जी, कैसे मुख दिखलाऊं ।

अंतर में है जगत यह संचित, कैसे इसे हटाऊं ॥

२.जब तक जग है अंतर बैठा, मन निर्मलता नाहीं ।

तब तक दर्श नहीं है संभव, कैसे तुमको पाऊं ॥

३.विकृत मन से रहा ही लड़ता, दूर विकार भए न ।

बीती आयु विरथा तुमको, कैसे मैं बतलाऊं ॥

४.काम क्रोध मद लोभ भरा है, माया माहीं डूबा।

समझ मेरी नासमझ बनी है, कैसे मन को लाऊं ॥

५.खोटा खरा न जानूं मैं तो, क्या होवेगा मेरा ।

तुम ही रक्षक मेरे प्रभुजी, कैसे और के जाऊं ॥

६.तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, नाहीं कोई दूजा ।

किसके द्वारे जाए पड़ूं मैं, कैसे हाथ फैलाऊं ॥

(१४)

१.माया से पर मेरा राम ।

बंधन मुक्त करे जीवों को, ऐसा नाम है राम ॥

२.राम मेरा है ऐसा दाता, सबको देवनहारा ।

कष्ट हरण जीवों के करता, देवत वह विश्राम ॥

३.शरण लेत हैं जो सदगुरु की, ता का ध्यान वह धरता ।

दूर करे दुख ता के सारे, करत उसे निष्काम ।।

४.गुरुकृपांजन नयनन लावे, दीखत उसे जग माहीं ।

माया भ्रम सब मिट जावत है, पावे प्रभु का धाम ॥

५.तीर्थ शिवोम् सुनो प्रभु मोरी, ऐसी किरपा कीजो ।

राम ही राम जपूं मैं निसदिन, सर्व प्रकाशक राम ॥

(१५)

१.अब तेरे दर पर खड़ा हूं, मांगता हूं भीख मैं ।

कर कृपा मुझ पर प्रभुजी, मांगता हूं भीख मैं ।।

२. तुम हो देते सब जगत को, तुम सा कोई दाता नहीं ।

मैंने है झोली फैलाई, मांगता हूं भीख मैं ।।

३. तुम ही देते हो सभी कुछ, जो है जिसको चाहिए ।

अब तो मांगू और कुछ मैं, मांगता मैं भीख हूं ॥

४. तंग आया हूं जगत से, हूं दुखी भोगों से मैं ।

पीछा मेरा इन से छुड़ाओ, मांगता मैं भीख हूं ॥

५.मन से तृष्णा सब हटाओ, प्रेम ही मुझ में रहे ।

और है इच्छा न कोई, मांगता मैं भीख हूं ॥

६. हाथ फैलाए हैं मैंने, अर्ज करता है शिवोम् ।

मुझ पर कृपा मुझ पर कृपा, मांगता हूँ भीख मैं ।।

(१६)

१.तुम कृपा करत हो जीवों पर ।

भुक्ति मुक्ति के देवनहारे, वर्षा बरसाते जीवों पर ।।

२. मैं तो नीच अधम पापी हूं, तू सब का रखवाला ।

तुझ को जीव हैं एक समाना, किरपा करत जीवों पर ॥

३.मत देखो प्रभु अवगुण मोरे, अवगुण मोर अनन्ता ।

सम दृष्टि हो दीन दयाला, दयावन्त हो जीवों पर ॥

४.मुझ में तो अवगुण सारे ही, तुम अनन्त भगवन्ता ।

तीर्थ शिवोम् शरण में तुमरी, करते मेहर हो जीवों पर ।।

(१७)

१.मैं तो खड़ी हूँ तुमरे द्वार।

तुम तो हो ऐसे निर्मोही, खोलत नहीं किवार ॥

२. कब की रही पुकार मैं तोहे, सुनत नहीं तुम काहे ।

भव जल डूबी जात रही हूं, लीजो मोहे उबार ॥

३. मेरे पास नहीं है कुछ भी, पूजा काह करूं मैं ।
धूप दीप नैवेद्य नहीं है, आंसू हैं दो चार ॥
४. कुछ भी तुम को दे न पाऊं, तुम ही मेरे सब कुछ ।
मैं दुखयारी विनय करत हूं, करती बारम्बार ॥
५.तीर्थ शिवोम् पुकार करत हूं, ठुकरा मुझे न देना ।
खोजत खोजत जग में सारे, आई तेरे द्वार ॥

(१८)

१.मोरे प्रियतम अर्ज़ गुजारूं ।
मैं दुखियारी जग की मारी, तेरा पंथ निहारूं ।।
२.कब किरपा मेरा प्रियतम करसी, उठ उठ रस्ता देखूं ।
मुझ को पी क्यों दिया भुलाए रहती यही विचारूं ॥
३.किस घर मोरा पीव विराजे, पता भी मुझको नाहीं ।
डोलत फिरती मैं मतवारी, मन में याद है तारूं ।
४.तीर्थ शिवोम् अगन बिरह की, बुझती नहीं बुझाए ।
अब तो तड़पत मोरा हिरदय, कब पी संग बिहारूं ॥

(१९)

१. अब तो हर पल हर घड़ी, तेरा ही ध्यान बना रहे।
सिमरूं मैं तेरे नाम को, मन धाम तेरा बना रहे ।।

२. कर्म जो जग में करूं, सेवा समझ तेरी करूं ।
हिरदय में तेरा भाव हो, तेरा सरूप जमा रहे ॥
३. हिरदय में तेरा ध्यान हो, हाथों में तेरा काम हो ।
हर पल तुम्हारे रंग में, मैं रंगारंग बना रहूं ॥
४. अच्छा बुरा जो भी मिले, सब रूप तेरे ही दिखें ।
हो राग द्वेष नहीं मुझे, तेरे ही संग जमा रहूं ॥
५. है मन में केवल चाह यह, तेरी कृपा मुझ पर रहे ।
भय क्रोध लोभ न हो मुझे, तेरे ही साथ जुड़ा रहूं ॥
६. शत्रु बड़ा अभिमान है, करता है भिन्न वह जीव को ।
अब बीच से जाए हटे, अभिमान रहित बना रहूं ॥
७. शिव ओम चरणों में पड़ा, तेरी शरण में हूँ प्रभु ।
तेरा ही सेवक शिष्य हूँ, सेवा में तेरी खड़ा रहूँ ॥

(२०)

१. श्याम तू रंगत अजब सजाई ।
रंगारंग का जगत बनाया, चेतन दियो मिलाई ।।
२. जड़ दीखे चेतन-वत लागे, ऐसा जगत रचाया ।
जड़ चेतन का मिश्रण करि के, दियो सभन भरमाई ॥
३. तुम माया में छिपे रहत हो, न कोई देखे समझे ।
जगत दिखाया सब को परगट, आपन लियो छुपाई ॥
४. तीर्थ शिवोम् विनती कर जोड़े, दर्शन अपना दीजो ।
माया मोहे बहु भरमाए, कोई न सकत लंघाई ।।

(२१)

१. श्याम तेरी टेढ़ी चाल निराली ।
मोह लेत मन सारे जग का, मैं हुई गई मतवाली ॥
२. माखन चोरे, मटकिन फोरे, वंशी रहत बजावे ।
बाल ग्वाल संग नाचे गावे, करे सभन रखवाली ॥
३. फिर भी न्यारा है तू सबसे, न कुछ तुम को छूता ।
देख देख मैं हुई बावरी, करता तू मतवाली ।।
४. तीर्थ शिवोम् शरण में आई, अपना दर्शन दीजो ।
मोहे दर्श दिखावत नाहीं, काहे रखता खाली ॥

(२२)

१. हे कृष्ण मुरारी ठहर तो जा, मन मेरे की तो सुनता जा ।
मैं रोक रही हूं राह तेरा, मन मेरी बात तो धरता जा ॥
२. मैं कब से तुम्हें निहार रही, निर्मोही है तू बन बैठा ।
मेरे दिल पर जो बीत रही, उस पर भी ध्यान तो करता जा ।।
३. मैं तड़पत नयनन नीर बहे, तेरे बिन मन कुछ न भाता ।
तेरा ही हरदम ध्यान रहे, दुखयारी का दुख हरता जा ॥
४. तेरे मन कैसे भाऊं मैं, और तुझको कैसे पाऊं मैं ।
मुझ पर कुछ कृपा करो प्रियतम, कुछ मारग तो बतलाता जा ।।
५. शिवोम् मैं तेरे चरण पड़ी, न सूझत रहा मुझे कुछ भी ।
हूं शरण तुम्हारी मैं आई, मुझ को तो पार लगाता-जा ॥

(२३)

१. मैं रही पुकार तुम्हें स्वामी, तुम आओ पीर मिटा जाओ।

मेरे मन अन्तर होत व्यथा, हिरदय की पीर छुड़ा जाओ।।

२. मैं अबला नारी दुखयारी, है बल नाहीं कुछ भी मुझ में।

हूं शरण तिहारी मैं आई, दुख मेरा तुम हटवा जाओ।।

३. है जगत सतावत बहुत मुझे, समझे न मन की पीरा को।

मैं रो रो तुम्हें पुकार रही, मन व्यथा को पार लगा जाओ

४. मैं अपने मन का क्या सोचूं, मैं तो कुछ कर न पाती हूं।

तुम ही तो खेवन हार मेरे, नैया को पार लगा जाओ।।

५. शिवोम् गई मैं हार सभी, न सूझत रहा मुझे कुछ भी।

अब तुमरे द्वारे आन पड़ी, अब अपना दर्श दिखा जाओ।।

(२४)

१. मैं तो अपने श्याम की दासी रे।

सारे जग में श्याम रमा है, घट घट बासी रे॥

२. जोत जगाऊं मन मंदिर में, आशा श्याम मिलन की।

श्याम विराजे मन के माहीं, हटे उदासी रे॥

३. मधुर तान वह छेड़े मुरली, गोपिन मन हर लेवे।

नाचत गावत गोप गवाले, जगत उदासी रे॥

४. श्याम दिखाओ दर्शन अपना, जिय दर्शन बिन तड़पे।

द्वार तुम्हारे आन हूं ठाड़ी, चरनन दासी रे॥

५.तीर्थ शिवोम् जगत सब त्यागा, पड़ी तेरे चरणों में ।
घट घट वासी सुख अविनाशी, मन के बासी रे ॥

(२५)

१. मैं तेरे दर पह आ ठहरा, तुम अपना मुझे बना लेना ।
सब छोड़ के चरणों में आया, मुझे अपना दास बना लेना ।।
२.मन ने तन ने मुझे दुख दीना, मैं भाग जगत में बहुत रहा ।
अब आया तुमरे द्वारे हूं. मुझ को न परे हटा देना ।।
३.जग तो दुख देता है सबको, अच्छा या बुरा कोई भी हो ।
पर तुम तो परम दयालु हो, मुझ को न दूर भगा देना ।।
४.मैं बहुत ही भटका फिरत रहा, पर कोई ठोर नहीं पाई ।
तब आई याद तेरी मुझको, चरणों में जगह बना देना ।।
५.मैं अच्छा बुरा भी हूं जैसा, पर तेरा मैं तो हूं ही हूं ।
चरणों से लिपटाए रखना, मुझे दिल से नहीं हटा देना ॥
६.शिवोम् तुम्हारी शरण पड़ा, बस अपना मुझे बना लीजो ।
कहीं मारग भटक न जाऊं मैं, अपने ही माही समा लेना ।।

(२६)

१.मैं भी लेकर माखन बैठी, श्याम नहीं तुम आए ।
तुम को आया नहीं देख कर, हृदय मोर अकुलाए ॥
२.कब की रही बिलोए माखन, मनवा निर्मल कीना ।
आओ भोग लगाओ प्रियतम, हिरदय माही समाए ॥
३.कौन सो माखन मन को लागे, देयो मुझे बताए ।

मैं तो समझी मोरा माखन, तेरे मन को भाए ॥

४.तीर्थ शिवोम् है माखन मनवा, निर्मल जो बन जाई ।

कोमल मधुर रसीला मनवा, यही श्याम मन भाए ॥

(२७)

१.मैं क्या खोलूं तेरे आगे बतियां ।

जो दुख सहे हैं जग में मैंने, लिख लिख भेजूं पतियां ॥

२.तेरे बिन कुछ सूझत नाहीं, तुमरे ही मन जाए।

नींद न नयनन, भूख न लागत, जागत निकलत रतियां ॥

३.सब मतवाले जगत सुखों के, पी का ध्यान किसे न ।

तुमरी बात करूं जिस आगे, करत व्यर्थ की बतियां ।।

४. प्रेमी भोगी साथ निभे न, मेल न कहीं मिलत है ।

जब मन होता बहुत व्यथित है, तुमको लिखती पतियां ।।

५. तीर्थ शिवोम् मैं पायं लागूं, अपने पास बुला लो ।

मैं तो तड़प तड़प रह जाऊं, सोचत रहती बतियां ॥

(२८)

१. प्रियतम डूबी जात रही ।

आओ दौड़ो बेग करो अब, भव जल जात रही ।

२.विपद पड़ी है, मोरी नैया, तुम ही केवल एक खिवैया ।

मो को एक भरोसो तुमरा, गहरी जात रही ॥

३.अटकी हूं मंझधार में मैं तो, बल भी क्षीण हुआ है।
घिर घिर आए काली बदरिया, विपदा माहीं रही ॥
४.चहूं दिशा गहरा जल दीखत, न कोई खेवन हारा।
हुई निराशा जात है भारी, दीखत नाहीं सही ॥
५.तीर्थ शिवोम् हूं मैं दुखियारी, तुम ही एक पुकारूं ।
टेर सुनो प्रभु आए मोरी, शरणी जात रही ॥

(२९)

१.मैं शरण तुम्हारी हे प्रियतम, अब विनय सुनो दुखियारी की ।
जग रात भयानक सिर पर है, कब तम छिटके अंध्यारी की ।।
२. चहुं ओर अंधेरा छाया है, सूझत नाहीं मुझको कुछ भी ।
है जाना किधर, कहां जाना, है दशा हीन मतमारी की ॥
३. वन पर्वत भीषण है भारी, टेढ़ा पथरीला मारग है।
मारग न सूझे इस तम में, अब टेर सुनो दुखियारी की ॥
४.तन में है तो ताकत नाहीं, मन बुद्धि सभी मलीन हुए ।
अज्ञान है छाया अंतर में, राह जानत नहीं सुखारी की ॥
५.मैं जाऊं कहां किसको पूछूं, कोई न बतलाने वाला ।
सद्गुरु बतलाए यह मुझको, है कौन गली दुखहारी की ।।
६.शिव ओम् पड़ी हूं चरणों में, मुझको तो उठा न देना तुम ।
अपने चरणों में रख लीजो, है विनय यही दुखियारी की ।।

(३०)

१.राम जी लीजो मोहे उठाए।

जग कीचड़ में फँसी पड़ी हूं, मो से उठा न जाए॥

२.जो तुम रूठ गए मोरे प्रियतम, पड़ी रहूं कीचड़ में।

दूजा ऐसा दीखत नाहीं, ले जो मोहे उठाए।।

३.रही पुकारत मैं थक हारी, टेर न सुनने हारा।

अब तो एक भरोसा तुमरा, दूजा नाहीं उठाए॥

४.तीर्थ शिवोम् विनय प्रभु आगे, मुझे को मत बिसराओ।

दासी तुमरी हूं मैं प्रियतम, हाथ बढ़ाए उठाए॥

(३१)

१.अब चले आओ तेरे बिन, है तड़पता दिल मेरा।

और इच्छा है न कोई, है तड़पता दिल मेरा॥

२.तेरे बिन भावे न कुछ भी, है मुझे तड़पन यही।

कैसे पाऊं तुमको प्रियतम, है तड़पता दिल मेरा॥

३.छोड़ दी है जग की आशा, जो कभी मन में रही।

अब नहीं है कोई आशा, है तड़पता दिल मेरा॥

४.मन में है इक हूक उठती, तेरे मिलन के वास्ते।

आ मिलो प्रियतम प्यारे, है तड़पता दिल मेरा||

५.जब करे कोयल है कू कू, मन में याद आ जाय है।

कब हों मुझे दर्शन तुम्हारे, है तड़पता दिल मेरा॥

६.ध्यान रखते तुम जगत का, क्यों मुझे बिसराययाा।

मैं तो प्रेमी नित्य तेरी, है तड़पता दिल मेरा ॥
७.शिव ओम् गुरुवर कर कृपा, प्रियतम प्यारा आ मिले ।
रोती बिलखती फिर रही हूं, है तड़पता दिल मेरा ॥

(३२)

१.मैं तो कब की पड़ी हूं सोए, आन जगाओ मोहे ।
मैं तो विषयन माहीं डूबी, आन बचाओ मोहे ॥
२.जग जानत अपने को जागा, माया माहीं सोया ।
ज्ञान होय तब जागा समझो, ज्ञान लखाओ मोहै ॥
३.तीर्थ शिवोम् शरण हूं तेरी, माया तम मिट जाए।
तेरे रंग में डूब रहूं मैं, रंग चढ़ाओ मोहे ।।

(३३)

१.

मेरे सैंया बिछुड़ के तो जाओ नहीं,
मैं पुकारूं हूँ तेरे ही दर पर खड़ी।
मैं तो दासी हूं प्रेमी तेरे नाम की,
मैं हूं लेती तेरा नाम ही हर घड़ी॥

२.

यह ही माया ने हमको है विरह दिया,
इसको आने न देती मैं घर आपने ।
अब तो तुम जा रहे मैं खड़ी देखती,
रहूं कब तक खड़ी ऐसे दर पह पड़ी।

३.

मेरे तुम ही हो मालिक हो सब कुछ तुम्हीं,
मैं हूँ जानूं किसी दूसरे को नहीं।
अब तू ही लाज रखना मेरे हे प्रभु मैं हूं,
आशा लिए तेरे दर यह अड़ी ॥

४.

प्रभु आ जाओ वापिस न जाओ कहीं,
मेरा मन तो तेरे बिन नहीं लगता।
नाम तेरे की माला शिवोम् अब लिए,
नित रहूं फेरती तेरे दर पह खड़ी ॥

(३४)

१.मैं तो श्याम को मनाऊंगी रिझाउंगी।
श्याम को मनाय के, श्याम को रिझाए के, प्रियतम प्यारा पाऊंगी ।।
२. श्याम है मोरा वंशी बजावत, जग विस्तार करत है ।
श्याम की लीला महिमा न्यारी, श्याम के घर मैं जाऊंगी ।।
३. श्याम बड़ा ही दीन दयालु, क्षमा करत दीनन को ।
मुझसा बड़ा दीन न कोई, श्याम की किरपा पाऊंगी ।।
४. रीझत वह है निर्मल मन पह, कर्म विकार हो नाहीं ।
सेवा भक्ति को अपना कर, मैं निर्मल बन जाऊंगी ।।
५. टेर सुनो नटवर गिरधारी, शरण तिहारी आई ।
दीन हीन को अपना कर लो, मैं प्रेमी बन जाऊंगी ।

६. तीर्थ शिवोम् हौं विनय करत हूँ, अवगुण मोर न चीह्नों
मैं तो तुमरी दासी प्रियतम, द्वार तुम्हारे आऊंगी ॥

(३५)

१. मैं तो दर्शन मांगू तेरा ।
और न चाहिए कुछ भी मोहे, एक अनुग्रह तेरा ॥
२.जग तो बड़ा लुभाना दीखत, भर्म ही सब है मन का ।
सुख तो तेरे संग विराजे, सुख ही रूप है तेरा ॥
३.तीर्थ शिवोम् विनती कर जोड़े, हूं मैं शरण तिहारी ।
हूं तो कुटिल अजान बालिका, दर्शन मांगू तेरा ॥

(३६)

१.मैं तो उलझा बीच जगत के सुन लो विनय हमारी।
कभी मरूं और कभी जिऊं मैं, हालत यही हमारी ॥
२.सेवा तुमरी न कर पाता, स्वारथ में ही डूबा।
हाथ पांव हूं बहुत मारता, एक न चले हमारी ॥
३.गले गले हूँ जल में डूबा, भव सागर है गहरा।
कैसे पार करूं गहरा जल, समझ न आए हमारी ॥
४.जीवन नौका टूट रही है. पल पल छिन छिन माहीं ।
आओ प्रभु बचाओ इसको, यह ही विनय हमारी ॥

५.पड़ा हूँ तेरे दर पह आकर, तुमी बचावन हारे।
टेर सुनो अब आए प्रभुजी, बीती उमर हमारी ॥
६. तीर्थ शिवोम् वेग कर आओ, जग है खाय जाता ।
अन्तर शत्रु दुख हैं देते, रक्षा करो हमारी ॥

(३७)

१.तेरे लिए तो क्या कठिन, उद्धार करना जीव का ।
पापी कुकर्मी नीच का, जग में घिरे इस हीन का ॥
२.विषयों में रहता डूबता, भोगों को हूं मैं भोगता ।
बेड़ा तो कर दो पार तुम, मंझधार से इस दीन का ॥
३.विषयों की आंधी है उठे, है मन को चंचल वह करे ।
मैं बचा पाता नहीं हूं, मन है निर्बल दीन का ॥
४.क्या करूं किसको पुकारूं, रास्ता सूझे नहीं ।
अब विनय सुन लो हमारी, मन दुखी है दीन का ॥
५.आ गया चरणों में तेरे, छोड़ कर सारा जगत ।
अब तो सुध लो हे प्रभु जी, आसरा तुम दीन का ॥
६. हे प्रभु हो तुम ही मेरे, और जाऊं मैं कहां।
शिव ओम् का है एक तू, इस दीन का, इस हीन का ॥

(३८)

१. कठिन चढ़ाई तेरे घर की, मुझसे चढ़ा न जाए।
जग बंधन में जकड़ रहा हूं, मुझ से हटा न जाए ॥

२.अन्तर हो कर दूर बसा तू, गुप्त हुआ तू बैठा ।
कैसे पहुंच द्वारे तुमरे, मुझ से रहा न जाए ॥
३.कहते जग से हटना पड़ता, तभी तुम्हीं तक पहुंचे ।
वह तो छूटत नाहीं मुझसे, मुश्किल कहा न जाए ॥
४.बहुत जतन है कीना मैंने, सफल हुआ मैं नाहीं ।
बिना कृपा हे तेरी प्रभुजी, पार हुआ न जाए ॥
५.मैं आया हूं शरण तिहारी, किरपा मुझ पह राखो ।
पहुंच सकूं मैं द्वारे तुमरे, तुम बिन रहा न जाए ।
६.तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, मैं न आय सकूं जो ।
नीचे आ कर दर्शन दीजो, मन शीतल हो जाए ॥

(३९)

१.हे मेरे बालमा, मान भी मान जा ।
तेरे पैयां पड़ूं सजना, मान भी मान जा ॥
२.कसम तुझको प्यार मेरे की, मेरे मन की आशाओं की ।
तेरा तुझको ही है वासता, मान भी मान जा ॥
३.मैं रिझाएं मनाए रही हूं, तुम तो अकड़े रहे हर तरह ।
अब अकड़ छोड़ कर मान जा, मान भी मान जा ॥
४.मेरी हालत बुरी हो रही, हर दम मैं बेचैन बनी हूं।
तुझे पल पल मेरा वासता, मान भी मान जा ॥
५.आशाओं में बैठा है तू, अरमानों का सिंधु है तू ।

तेरे बिना कोई न अपना, मान भी मान जा ॥
६.मैं तेरे ही सन्मुख खड़ी, तेरे पाओं पह हूँ पड़ी ।
छोड़ तुम्हें न जाऊं कहीं, मान भी मान जा ॥

(४०)

१. हे मेरे राम बचा लो मुझ को ।
डूबती नैया हूं मैं, पार लगा दो मुझको ॥
२. तेज आंधी है चले, नाव है डोले हरदम ।
नाव मैं खे न सकूं, राम संभालो मुझको ॥
३. और आशा न कोई ,पार लगावे आ कर ।
तुमको ही याद करूं, आओ उठाओ मुझको ॥
४. मैं तो मुश्किल में पड़ा, तुमको न मुश्किल कोई ।
आन जो विपद पड़ी, दूर हटाओ मुझको ॥
५.मैं तो हूँ द्वार पड़ा, करता विनय हूं तुमसे।
अब सुनो टेर मेरी, दर्स दिखाओ मुझ को ।
६. मैं हूं शिव ओम् दुखी, बीच भंवर में हूं मैं ।
तेरे दर हूं मैं पड़ा, परदा उठाओ मुझको ॥

(४१)

१. मेरी अक्खियां तेरे राह लगी।
हिरदय तेरा ध्यान करे है, तेरी ही इक आस जगी ॥
२. तेरे बिन सूझे न कुछ भी, तुम को हर दम सिमरूं ।
तेरा ही गुणगान करूं मैं, अंतर माहीं अगन लगी ॥

३. वृक्ष लताओं से मैं पूछूं, कित को श्याम गयो है।
रसना तेरा नाम न छोड़े, प्रेम चिंगारी आन लगी ॥
४. हालत मेरी देखो प्रियतम, अब तो दर्शन दीजो।
विनय करूं हूं, मैं चरणों में, तुम सों ही है प्रीत लगी ।।
५.तीर्थ शिवोम् है नयनन माहीं, अश्रुधारा बहती।
रोय रही है यह दुखियारी, तेरे चरणों माहीं लगी ॥

(४२)

१प्रभु क्यों मोहे बिसार दियो।
मैं तो सेवक चाकर तेरा, हिरदय माहीं निकाल दियो ।।
२. तुम हो अशरण शरण प्रभु जी, दीनन हितकारी हो।
मो सम दीन है दूजा नाहीं, किरपा काहे हटाय लियो ।।
३. नहीं तुम तें बलवान है कोई, तुमरे सम भी नाहीं।
फिर भय किस का मोरे प्रभु जी, अपना हाथ उठाय लियो ।।
४. छोटे को तुम बड़ा बना दो, और बड़े को छोटा।
क्या कठिनाई मेरे हित में, मन से मोहे बिसार दियो ।।
५. तीर्थ शिवोम् हे मेरे प्रियतम, मैं तो शरण पड़ा हूं।
पार कराओ सागर मो को, काहे को भरमाय दियो।

(४३)

१.मच्छली तड़पे नीर बिना ज्यों, मैं भी तड़पूं राम बिना।
चैन नहीं है पल भर मोहे, मैं तड़पूं विश्राम बिना ।।

२.राम पिआर जग सारे का, पर वह गुप्त है बैठा।
मिलता नाहीं जतन किए से, मैं तड़पूं विश्राम बिना ।।
३.ढूँढ थकी मैं सारे जग में, घूमे सब तीरथ भी ।
पता राम का पाया कुछ न, मैं तड़पूं विश्राम बिना ।।
४.अब मैं खोजन कहां को जाऊं, ठौर ठिकाना नाहीं ।
बिना पते मैं घूम रही हूं, मैं तड़पूं विश्राम बिना ।
५.न कोई राम मिलावन हारा, न ही ठौर बताए ।
कैसे फिर में राम को खोजूं, मैं तड़पूं विश्राम बिना ।।
६.तीर्थ शिवोम् सुनो रघुवीरा, तुमरे शरण पड़ी हूं।
अब तो दर्शन दी जो मुझको, मैं तड़पूं विश्राम बिना ।।

(४४)

१.मैं राम कहां पह पाऊं ।
जितना खोजूं छुपता जाए, राम को देख न पाऊं ॥
२.राम किया जंग का विस्तारा, स्वयं गुप्त है बैठा ।
कण कण राम समाया मेरा, पर मैं देख न पाऊं ॥
३.माया अंदर घर है कीना, पलट गई है बुद्धि ।
राम सामने दीखत नाहीं, ता मैं देख न पाऊं ॥
४.जगत बावरा खोजत बाहर, अंदर माया बैठी।
राम कहीं न देखन देती, ता ते देख न पाऊं ॥
५.माया परदा उठत न जब तक, राम न अंतर दीखे ।

माया जीव रहे लिपटाना ता ते देख न पाऊं ॥
६.तीर्थ शिवोम् शरण हूं तेरी, राखो किरपा मो पर ।
मन ठगनी मन में बैठी, ता ते देख न पाऊं ॥

(४५)

१.हूँ शक्तिहीन प्रभु मेरे ।
शक्ति तेरी शक्तिशाली, वह तो पास हैं तेरे ।।
२.मैं मिथ्या हंकार करत हूं. मैं मैं मैं मैं करता ।
शक्ति तो कुछ नाहीं मो पह, वह तो पास है तेरे ॥
३.मन बुद्धि और देह में दिखती, क्रियाशीलता जो भी ।
वह तो सब शक्ति की किरिया, वह तो पास है तेरे ॥
४.तू ही कर्ता, भर्ता, हरता, जग संहार करत है ।
शक्ति तेरी सर्व बनाया, वह तो पास है तेरे ॥
५.मन से उठ कर शक्ति में जब, घर मेरा बन जावे ।
रमा रहूँ शक्ति में हरदम, जो कि पास है तेरे ॥
६.तीर्थं शिवोम् कृपा भगवन्ता, शक्ति परगट मो पह ।
चेतन रूप जगत का देखूं, वह तो पास है तेरे ॥

(४६)

१.कैसे मैं समझाऊं तुम को, मुझे प्रेम है तुमसे ।
चाह मिलन की मन में मेरे, आश यही है तुमसे ॥
२.मन मलीन है मेरा किंतु, तुमसे प्रेम घना है ।

छूटन चाहूं जग विषयों से, यही विनय है तुमसे ॥
३.जग को छोड़न चाहूं मैं तो, जग है नाहीं छोड़े ।
मुक्त करो अब इन भोगों से, कहना यही है तुमसे ॥
४.मन मलीन से हीन बनी हूँ, कृपा की हूं अधिकारी ।
विरद संभारो दया करो हे, दर्शन चाहूं तुमसे ॥
५.जगत जो मेरे मन के अन्दर, तुम भी वहीं खड़े हो ।
तुम से जगत न शक्तिशाली, यही पुकारूं तुमसे ॥
६.तीर्थ शिवोम् शरण में आया, करो अनुग्रह मो पर ।
प्रेम पुकार सुनो प्रभु मोरी, मांगत कृपा मैं तुमसे ॥

(४७)

१.अब मोहे उबारो राम प्रभु ।
मैं दासी मैं सेवक तुमरी, राखो मेरी लाज प्रभु ॥
२.तुमरी सेवा करते करते युगों युगों ही बीते ।
अब तो कृपा करो मेरे दाता, नहीं सहारा मोर प्रभु ॥
३.बंधन कर्म में जकड़ी हूं मैं, साहस बल है नाहीं ।
तुमरे बल से ही बलशाली, शक्ति करो प्रदान प्रभु ॥
४. शरण तुम्हारी पकड़ी मैंने, ठुकरा मुझे न देना ।
तुमरा एक भरोसा बल है, दीन हीन हूँ आज प्रभु ॥
५.जगत जाल में बंधी हुई हूँ, कर्मों में मैं घिरी हुई हूं ।
तुम ही मुझे बचावनहारे, आई तुमरे द्वार प्रभु ॥
६.तीर्थ शिवोम् मैं हूं दुखियारी, अर्ज़ गुज़ारू तोहे ।
मेरा भी उद्धार करो तुम, पार करावनहार प्रभु ॥

(४८)

१.प्रभु खोलो बंद किवारे, मैं आई शरण तिहारे ।
तुम प्रणतपाल हो स्वामी, तुम हो सबके रखवारे ।
२.मैं करत विनय तुम आगे, अब सुध राखो प्रभु मोरी ।
विषयों के माहीं जकड़ी, अब तेरे एक सहारे ॥
३.मैं खोज फिरी जग सारा, पर कोई मीत मिला न ।
अब आई तुमरे द्वारे, अब राखो प्रभु प्यारे ॥
४.मैं पल पल छिन छिन माहीं, हूं जलत रही दुखियारी ।
न मिला भरोसा कोई बस तुम ही एक हमारे ।।
५.किसको पूछूं मैं जा कर कोई न सुननेहारा ।
बस तुम ही मेरे प्रभु जी, बस तुम ही सुननेहारे ॥
६.शिव ओम् सुनो भगवन्ता, मेरा न जग में कोई।
एक हार दुआरे आई, न करना कहीं किनारे ॥

(४९)

१.नारायण गोविंद माधव, हम पह किरपा कीजिए ।
शरण में तुमरी पड़े हैं, हमको अपना लीजिए ।।
२.वासनाओं में पड़े हैं, कामनाएं घेरती ।
इन के बंधन से छुड़ाओ, शरण में रख लीजिए ।।
३.मूढ़ बालक हम तेरे हैं, है कोई अपना नहीं ।
हम को सहारा दीजिए, किरपा तो हम पह कीजिए ।
४.हो गए बलहीन हम हैं, कुछ भी कर पाते नहीं ।
साधना सेवा न होती, बल की किरपा कीजिए ।।

५.आ गए दर पह तुमारे, मन में आशाएं लिए ।
आश पूरी कीजिए, मन हमरा निर्मल कीजिए ॥
६.आ गया शिव ओम् अब तो छोड़कर सारा जगत ।
मुझे पह किरपा कीजिए, अपना बना ही लीजिए ।।

(५०)

१.मन मेरा विक्षिप्त रहता, मैं सम्भल पाता नहीं ।
मोह तो कारण बना है, मैं समझ पाता नहीं ।
२.मोह से है वासना, मोह जग में बांधता ।
मोह से ही यह जगत है, मैं हटा पाता नहीं ॥
३.मोह बैठा मेरे मन में, सूझ न पड़ती कोई ।
कैसे उसको मैं हटाऊं, मैं छुड़ा पाता नहीं ॥
४.कब यह है मन से हटेगा, कब बनूंगा मुक्त मैं ।
अब तलक तो न हटा यह, मुक्त हो पाता नहीं ।।
५.हे प्रभु किरपा करो यह, जाए मन से मोह तो ।
मैं शरण तेरी प्रभु, मैं तो हटा पाता नहीं ॥
६.यह विनय शिव ओम् की, मुझ को हटा न दीजिए।
पर हटाओ मोह मन से, जो हटा पाता नहीं ॥

(५१)

१.हूं तेरे दर पह आया, हूं बन के मैं भिखारी ।
तुम सुन लो विनती मेरी, मैं हूं बड़ा दुखारी ॥
२.विपदाओं से घिरा हूं, विषयों में मैं फसा हूं ।
हैं भोग त्रास देते, जो हैं कि अत्याचारी ॥
३.जग है फसाए मुझको, कैदी हूं मैं जगत का ।
मारग न कोई सूझे, विनती सुनो हमारी ॥
४.मैं हारा लड़ता जग से, हूं मैं न छूट पाया ।
कैसे यह पिण्ड छूटे, है अर्ज़ यह मुरारी ॥
५.तेरा ही आसरा है, तुम ही हो एक मेरे ।
दूजा नहीं है कोई, रक्षा करो हमारी ॥
६.शिव ओम् है पुकारे, चरणों में हे हरिहर ।
छूटे यह माया जग की, जो है अति ही भारी ।।

(५२)

प्रभु जी मेर तेर से थाकी।
मेर तेर मन चंचल कीना, अब मैं इससे थाकी ॥
मेर तेर की फांसी पड़ गई, छूटे नाहीं छूटे।
अब तो घायल गिरी हुई हूँ, हूँ मैं बहुत ही थाकी ॥
हुई आतंकित इससे भारी, है यह बड़ी बीमारी ।

बड़ी बड़ों को दे पटकाए, करत सवारी ताकी ॥
मेर तेर छूटे प्रभु मोरा, तीर्थ शिवोम् पुकारे ।
तेर मेर ने सभी नचाया, मेर तेर न थाकी ॥

(५३)

१. अपनी शरण में राखो सद्गुरु, माया मोहे बचाओ ।
विषयों माही डूब रहा हूं, सागर पार कराओ ।।
२. जौ लगि मन मेरा थिर होवे, ऐसी युक्ति करीजे ।
आशा तृष्णा व्याप न पाए, मुझ को वीर बनाओ ॥
३. नाम दान दे अपना मोहे, भक्ति मारग खोलो।
तुमरे ताई प्रेम प्रकट हो, मन को धीर बनाओ ॥
४. सहज अवस्था मेरी भी हो, भोगों न घबराऊं ।
कर्म सभी बाहर हैं निकलें, मन को शुद्ध कराओ ॥
५. सद्गुरु देव शरण जो लेवे, मन आनंद वह पाता ।
करो प्रदान सुखी मन मोहे, श्री चरणों में लीजो ।
६. तीर्थ शिवोम् शरण गुरु देवा, तुमरे चरणों माहीं ।
मुझ पर कृपा करो मेरे स्वामी, अपना मोहे बनाओ ।।

(५४)

१. प्रभुजी, तुमरी ओर निहारूं ।
वैरी दुष्ट पड़े हैं पीछे, मन में यही विचारूं ॥
२. तुम रक्षक हो दीन दयाला, करो कृपा अब मो पर ।

डूब रही हूं भव सागर में, पड़ी हूं बीच मंझारू ।।
३. तुमको देख विकार हैं भागत, काल भी पास न आवे ।
नाम की किरपा मो पर कीजो, रस्ता रही निहारूं ।॥
४. तुमरे मिलन को मेरे प्रियतम, कब की राह खड़ी हूं।
इस आशा से करत प्रतीक्षा, अपना आप सँवारूँ ॥
५. पूजा ध्यान करूं मैं नित ही, पर मन निर्मल नाहीं ।
तब तक पाप कटें न मोरे, किरपा होय तिहारूँ ॥
६. तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, शरण तुम्हार पड़ी हूं।
कब आवेगा साजन मेरा, यह ही राह निहारूं ।

(५५)

१. हे मन प्रभु की शरण गहो ।
हर क्षण वह ही बने सहायक, ताके चरण लहो ।।
२. आदि अंत से प्रभु है न्यारा, दीन दयाल कृपाला ।
पग पग वह सम्भाले तुमको, मुख से राम कहो ।।
३. सांस सांस वह तुम्हें निहारे, है वह अनुपम दाता ।
प्रतिपालन है तुमरा करता, क्यों न राम कहो ।।
४. ताकी महिमा कही न जाए, गहर गम्भीर अनन्ता ।
किरपा कर के लेत मिलाए, ता गुण गान कहो ।।
५. तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, मैं हूं शरण तिहारी ।
छिन छिन पल पल नाम जपू मैं, मन से राम कहो ।

(५६)

१. विनय तुम्हारे चरणों माही ।
प्रभु शरण में मोहे राखो, और कामना नहीं ।।
२. बल बुद्धि विद्या नहीं माँगें, धन परिवार भी नाहीं ।
एक सहारा तेरा मांगू, और कामना नाहीं ॥
३. जग का वैभव तो मिथ्या है, साथ नहीं दे पाता।
एक तुम्हीं तो धन हो मेरे, और कामना नाहीं ॥
४. करू समर्पण मैं तुम ही को, बने रहो तुम मेरे ।
इसको छोड़ भला क्या मांगें, और कामना नाहीं ॥
५. तीर्थ शिवोम् शरण में तेरी, अपना मुझे बना लो ।
लगा रहूं चरणों में तेरे, और कामना नाहीं ।।

(५७)

१. प्रभु मेरा हिरदय साफ करो ।
मल विकार से भरी हुई हूं, भूलें माफ करो ॥
२. तुम ही शुद्ध करावनहारे, तुम ही दीन दयाला ।
विनय मेरी स्वीकार करो प्रभु, हिरदय साफ करो ॥
३. जतन किए कितने भी मैंने, हिरदय शुद्ध हुआ न ।
तुम ही कृपा करो मेरे प्रियतम, हिरदय साफ करो ॥
४. गीता में तुम किया है घोषित, शुद्ध करन पापों को ।
मुझ सी पापिन बड़ी न कोई, हिरदय साफ करो ॥
५. हिरदय अपना खोल दिखाऊं, कितना पाप भरा है।
अपनी पत राखो गिरधारी, हिरदय साफ करो ॥

६. मैं शिव ओम् तेरे चरणों में, रही पुकारत तोहे ।
दुखिया हूं अबला हूं नारी, हिरदय साफ करो ॥

(५८)

१.मैं चलता चलता आया, मैं गिरता पड़ता आया।
मुश्किल मैं सह कर आया, तेरी किरपा से आया ।
२.इतनी किरपा जो कीनी, स्वीकार भी मुझ को कर लो ।
मैं सेवक तेरे दर का, आशा लेकर के आया ॥
३.मैं जग से बहुत दुखी हूं, अपमान निराशा सहता ।
ठुकराया मै हूं जाता, यश सुन के तेरा आया ।।
४.कैदी पंछी की नाई, हूं पिजरे में मैं जकड़ा।
मुक्ति का दान है लेने, हूं भीख मांगता आया ।।
५.तुम दीनदयाल कृपालु, दीनों पर दया हो करते ।
है दीन खड़ा यह द्वारे, अनुनय है करता आया ।।
६.शिव ओम् सुनो प्रतिपाला, चरणों में दास पड़ा मैं ।
स्वीकार करो पापी को, घुटनों के बल हूं आया ॥

(५९)

१.तुम जानत प्रभु भजन न कीना ।
लाज बचाओ इस दुखिया की, जीवन में छल कीना ।।
२.घर परिवार को माथे राखा, भोगों का रस चाखा ।

अहं भाव की तुष्टि करता, तुम से नेह न कीना ।।

३.नेक कमाई कोई नाहीं, जीवन सारे माहीं ।

अब तो क्या क्या कहूं मैं तोहे,अनुचित लाभ है छीना ॥

४.जगत विषय है मोह का सागर, डूब इसी में रहता ।

अब तो मटका फूटा जाए, इसका ध्यान न कीना ॥

५.पाप की नैया डूबी जाए, उलझ रही मंझधारे ।

आओ प्रभु बचाओ इसको, तरन का न कुछ कीना ।

६.तीर्थ शिवोम् हूं अर्ज़ गुज़ारूं, मो पर किरपा राखो ।

पड़ा रहूं चरणों में तुमरे, आश्रय तुमरा लीना ॥

(६०)

१.दीनानाथ बचा लो मुझको, दीन-हीन दुखियारी ।

शरण में तुमरे आई प्रियतम हूं, अवगुण की मारी ॥

२. मैं बनी हुं प्रभुजी, कर कुछ भी न पाती ।

तेरा एक सहारा मुझको, शरण में आई बेचारी ॥

३. घर परिवार में जलती हारी, मन अज्ञान है छाया ।

कोई मारग सूझ न पाता, पड़ी हूँ मैं अंध्यारी ॥

४. क्रोध लोभ और मोह में जकड़ी छूट न मैं हूं पाती ।

कैसे छूटूँ समझ न आवे, विपदा अति ही भारी ।

५.पांच विकार बहुत दुख देवत, मन को चंचल रखते ।

कभी उठावें कभी गिरावें, बड़े ही अत्याचारी ।।

६. तीर्थ शिवोम् प्रभु सुध लीजो, आई तुमरे द्वारे।
मुझे बचा लो मेरे प्रभुजी डूबत रही मंझारी ॥

(६१)

१. राम मोहे यह वरदान ही दीजे।
मनोकामना सब ही पूरन नाम तुम्हारा लीजे ॥
२. मन में कोई इच्छा नाहीं, पूरण काम बनूं मैं ।
ध्यान धरूं और पल पल सिमरूं, ऐसा मो कर दीजे ।।
३. हिरदय तुमरे चरण निहारूँ, बुद्धि करूं विचारा ।
सारा जीवन तुमरे अर्पण, ऐसा अन्तर दीजे ॥
४. शोक मोह मन में न लागे, तुमसे प्रेम मैं राखूं ।
तुमरे बिन न कोई मोरा, मन में भाव यह दीजे ॥
५. तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, तुम ही हो इक मेरे ।
जुड़ा रहूँ तेरे चरणों में, ऐसा वर मो दीजे ॥

(६२)

१. प्रभु मोपे यह ही कर उपकारा ।
पांच दुष्ट हैं मन में बैठे, तेही कर संहारा ॥
२. काम क्रोध मोहे बहुत सतायो, लोभ करे उत्पाता ।
अहंकार है अत्याचारी, इनका कर निपटारा ॥
३. मोह फसावत मोको जग में, छूटन मोहे न देवे ।
परेशान वह बहुत करे है, कैसे होवे छुटकारा ॥

४. पांच विकार हैं संकटकारी, कोई गति न जाने ।
जीव को अपने वश में करते, करत हैं अत्याचारा ।।
५.आया प्रभु शरण तिहारी, रक्षा मोरी कीजे ।
चरणों माहीं मस्तक राखूं, करो मेरा उद्धारा ॥
६. तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, इनसे बहुत दुखी हूं ।
इनकी लीला कोई न जाने, न कोई आरा पारा ॥

(६३)

१. दीन दयाला गिरधरलाला, भव को औषध नाम तेरा ।
भव सागर से पार करे जो, भव का नाशक नाम तेरा ॥
२. समझा न मैं तेरी लीला, जग के माहीं लीन रहा।
अब यह सूझ है आई मुझको, तम का घातक नाम तेरा ॥
३. कृपा करो हे मेरे प्रभु जी, माया परदा दूर करो ।
पाप कटें और बंधन काटो, हितकारी है नाम तेरा ॥
४. मैं तो शरण तुम्हारी केशव, करत कृपा हो जीवों पर।
भव भंजक है मुक्तिदाता, पार करे है नाम तेरा ॥
५. राखो लाज हरि अब मोरी, विनती है प्रभु चरणों में ।
तीर्थ शिवोम् क्षमा प्रभु मोरे, दोष न देखे नाम तेरा ॥

(६४)

१. प्रभु यह ही विनती तुमसे है, किरपा कर के स्वीकार करो।
संतो का सेवक बना रहूँ, अभिलाष यह अंगीकार करो ।।
२. तू दीनदयाल कृपालु है, है कठिन नहीं कुछ भी तुझको।
संतन सेवा तेरी सेवा है, एक ही यह स्वीकार करो ॥
३. संतन तो रूप तेरा ही है, तेरा ही निसदिन भजन करें।
हो प्राप्त कृपा उनकी मुझको, विनती मन से स्वीकार करो
४.मैं सांस सांस ही स्मरण करूं, मैं तेरा ही नाम हृदय धारूं।
और संतन सेवा मगन रहूँ, किरपा कर के ऐसा वर दो ।।
५.शिव ओम् दयालु संत बड़े, आशीष मिले, भक्ति मिलती।
संतों के सम्मुख बना रहूँ, मुझ पर यह ही उपकार करो ॥

(६५)

१.मैं सिसक रही मैं तड़प रही, तुम क्यों तड़पाए जाते हो।
मन तुमरे बिन लागत नहीं, तुम काहे रुलाए जाते हो ॥
२.जाना न चाहे विषयों में, पर विषयों माही जात रहा।
मन को ऐसा क्यों कर दीनों, तुम क्यों भरमाए जाते हो ।।
३.मेरा मन दुविधा में उलझा, इक और तुम्हीं इक ओर जगत।
जाना और न जाना चाहूँ मैं जग में फिसलाए जाते हो ।।
४.अब मन में आस लगी तेरी, तुम ही मेरे प्रियतम हो।
अब मुझे बचा लो विषयों से, जग में अटकाए जाते हो ॥
५.मैं आई शरण तुम्हारी हूँ, बस अपना मुझे बना लीजो।
मन तो चंचल दुखदायी है, भोगों में लगाए जाते हो ।।

६.शिव ओम् संभालो अब मोहे, मैं शरण पड़ी हूं चरण पड़ी ।
न जग में कोई सहारा है, क्यों हाथ छुड़ाए जाते हो ।।

(६६)

१. हर दम पाऊं दर्शन तेरा ।
मन में निसदिन हे मेरे प्रभु, ध्यान सदा ही तेरा ॥
२. तेरा दर्शन मीठा लागे, मन आनंद समाए।
मगन रहूं हर दम तुझमें ही, दूजे मन न मोरा ॥
३. दीन दयाला, हे भगवन्ता, पूरण सर्व नियन्ता ।
केवल तुम्हीं समर्थ स्वामी, तू ही केवल मेरा ॥
४. एक सहारा तू भक्तन का, तू ही उन्हें संभाले ।
तू ही पालन करे जगत का, दिन और रात सवेरा ।।
५. तीर्थ शिवोम् कृपा भगवन्ता, दर्शन तेरा पाऊं ।
तुम्हें बिठाऊं मन मन्दिर में, ध्यान निरन्तर तेरा ॥

(६७)

१. हे अशरण शरण प्रभु मोरे, तुम पालनहार हमारे हो ।
मैं आया शरण तुम्हारी हूं पत राखनहार हमारे हो ।।
२. तुम बनो सहायक सभी जगह, घर बाहर में, मैं जहां रहूं ।
तुमरा सिमरन करता ही रहूं, तुम सुननहार हमारे हो ।।
जब जब भी मुझ पर भीर पड़े, तुम आना मेरी रक्षा को ।
मैं जानत केवल तुम्हें प्रभु, तुम दीनन के रखवारे हो ।।
४. कोई जब मुझ से भूल बने, तुम बालक जान क्षमा करना ।

एक सहारा तुमरा ही, जग की रक्षा करनारे हो ।।
५.मैं बालक तेरे द्वार खड़ा, यह विनय है मेरी चरणों में ।
संतुष्ट रहूं गुणवान बनूं, हर गुण के देवन हारे हो ।।
६. शिव ओम् मुझे ऐसा मन दो, जो सदा तुम्हारी शरण रहे ।
श्रद्धा सेवा अपनाए रहूं, तुम ही तो पिता हमारे हो ।।

(६८)

१.अब तो हूँ मैं शरण तेरी ।
मुझको चाहिए कुछ न जग में, केवल चाहिए शरण तेरी ॥
२.शरण तेरी में अतिशय सुख है, मन उन्मुक्त बने है।
अन्तर मस्ती मन आनन्दित, सुख ही सुख है शरण तेरी ॥
३. जब तक शरण तेरी है नाहीं, जग में दुख ही होता है
शरण तेरी है रूप तेरा ही, रूप अलौकिक शरण तेरी ॥
४.अब तो तेरे ही आश्रित हूँ, अहं नहीं अब बाकी है।
अहं लीन तेरे चरणों में, अहं हीन है शरण तेरी ॥
५. मोहे राखो शरण में अपनी, शरण बिना कुछ न सोहे ।
तेरा सेवक बना रहूँ मैं, रंगा रहूँ मैं शरण तेरी ॥
६. तीर्थ शिव शरण में लागा, मन बुद्धि है चरणों में ।
अब तो तेरी शरण ही जीवन, बना रहूं नित शरण तेरी ॥

(६९)

१. गहर गंभीर हो मेरे प्रियतम, तुम हो अगम अनन्ता ।

तुम को पाऊं कैसे प्रभुजी, विनय सुनो भगवन्ता ॥

२. सारा जगत खोजकर देखा, तुम सा मिला न कोई ।

तुमरे सम तो तुम ही दीखे, नहीं दूजा बलवन्ता ॥

३. अहं छोड़ जो सिमरन करता, गुण तेरे जो गाता ।

तुमरी कृपा प्राप्त वह करता, पाता भेद अनन्ता ॥

४. तीर्थं शिवोम् विनय चरणों में, शरण मोहे प्रभु ले लो ।

गुण गाऊं और नाम जपूं मैं, तुमसे नहीं अनन्ता ॥

(७०)

१.मैं तो श्याम को मनाऊंगी रिझाउंगी।

श्याम को मनाय के, श्याम को रिझाए के, प्रियतम प्यारा पाऊंगी ।।

२. श्याम है मोरा वंशी बजावत, जग विस्तार करत है ।

श्याम की लीला महिमा न्यारी, श्याम के घर मैं जाऊंगी ।।

३. श्याम बड़ा ही दीन दयालु, क्षमा करत दीनन को ।

मुझ सा बड़ा दीन न कोई, श्याम की किरपा पाऊंगी ।।

४. रीझत वह है निर्मल मन पह, कर्म विकार हो नाहीं ।

सेवा भक्ति को अपना कर, मैं निर्मल बन जाऊंगी ।।

५. टेर सुनो नटवर गिरधारी, शरण तिहारी आई।

दीन हीन को अपना कर लो, मैं प्रेमी बन जाऊंगी।।

६. तीर्थ शिवोम् हौं विनय करत हूँ, अवगुण मोर न चीह्नों ।
मैं तो तुमरी दासी प्रियतम, द्वार तुम्हारे आऊंगी ॥

(७१)

१.नदिया किनारे मैं बैठी, तेरा ही पंथ निहारूं ।
श्याम कहीं से आ जाए, मैं ता के पाओं पखारूं ॥
२.आसन देय बिठाए श्याम को, तासे करूं मैं बतियां ।
सुनत पुकार हमारी नाहीं, ता ते अर्ज गुज़ारूं ॥
३.दुखिया भई तेरे बिन प्रियतम, जगत बहुत दुखदायी ।
मन को त्रास बहत ही देवत, हर लो पीर हमारूं ॥
४.मैं मतवाली दर्श तेरे की, जिया न दूजे लागे।
करत पुकार मैं हुई बावरी, पाओं पड़त तिहारूं ॥
५. तीर्थ शिवोम यह टेर हमारी, सुन लो हे गिरधारी ।
रोवत रोवत दिन निकसत है, विपदा हरो हमारूं ॥

(७२)

१.मीरा बनाओ मुझको, सहजो बनाओ जी।
हूं तेरे दर पह आई, प्रेमी बनाओ जी ॥
२. मैं हूँ दुखारी जग में, अपना नहीं है कोई।
अपना बनाओ मुझको अपना बनाओ जी ॥
३. खोजत फिरूं हूं वन-वन, मिलता पता न कोई।
मुझको दर्श दिखाओ, अपना बनाओ जी ॥

४. भोगों ने मुझको घेरा, तड़पूँ हूँ रात दिन में ।
विषयन से मुक्त कर दो, अपना बनाओ जी ॥
५. रस्ता खड़ी हूँ रोके, बचकर निकल न जाना।
तेरे दर्श की भूखी, तृष्णा मिटाओ जी ॥
६. कैसे मैं पहुंचूँ तुझ तक, रस्ता में चल न पाती ।
मारग दिखाओ मुझको, मारग दिखाओ जी।।
७. शिव ओम् मैं पुकारूँ, रो-रो तुम्हें ही प्रियतम ।
विपदा हरो मेरी अब, बंधन छुड़ाओ जी।।

(७३)

१.प्रभु मेरे बंधन देयो छुड़ाए ।।
२.कृपा करो तो पार होत हूँ, नहीं तो डूबत जाए ॥
३.गहरा जल है थाह न कोई, कृपा ही पार लगाए ।।
४.अधम नीच शरण में आई, मुझ को पार लगाए ।।
५.तुमरो एक भरोसो प्रियतम, यह नैया तर जाए ।।
६.हौं तो दासी जनम जनम की, अहंकार भरमाए ।।
७.तीर्थ शिवोम् शरण में आई, किरपा दे बरसाए ।।

(७४)

१. तेरे चरणों में अब तो आ गया हूं ।
करो किरपा मेरे गुरुदेव, अब घबरा गया हूं ॥

२.हैं खाई ठोकरें दुनिया में मैंने ।

तुम्हारे आसरे ही अब, तेरे दर आ गया हूं ॥

३. तुम्हीं माता पिता बंधु हो मेरे ।

तेरे चरणों में माथा मैं, नवाने आ गया हूं ॥

४.नहीं लगता है मन मेरा जहां में ।

जहां को छोड़ कर मैं तो, तेरे चरणों सहारे आ गया हूं।

५.बताया तुमने ही मुझको प्रभु है ।

प्रभु के वास्ते ही मैं, भटकता आ गया हूं ॥

६. किया शिव ओम् ने तुझ को ही है अर्पण ।

जो कुछ भी पास था मेरे, सभी ले आ गया हूं ॥

(७५)

१. प्रभुजी चरण धूली मैं तेरी ।

नित्य रहूं मैं सेवक तुमरा, हिरदय मूरत तेरी ॥

२.शरण तुम्हारी पड़ा रहूं मैं, नाहीं मुझे उठाए ।

केवल तुमको ही मैं पेखूं, गाऊं महिमा तेरी ॥

३. बहुत जीव पापी पाखण्डी, कर्म बुरे जो करते ।

तू ने बेड़ा पार किया है, शरण पड़े जो तेरी ॥

४. यह शिवोम् भी चरणीं लागा, विनय करत कर जोड़ी ।

मैं हूं पापी जीव बेचारा, पड़ा शरण हूं तेरी ॥

(७६)

१.गुणगान करूं दिन राती, प्रभु दर्शन दीजो मोहे ।
नयनन हैं दर्श के प्यासे, कुछ लागत नाही तोहे ॥
२.मन में है अभिलाष भारी, मैं करूं सेव भक्तन की ।
सेवा का अवसर दीजो, बड़ी आस लगी है मोहे ॥
३.है दूसर को भी नाहीं, हे प्रभु समान जो तेरे ।
मन से मैं तुझको सिमरूँ, इनकार न करना मोहे ॥
४.यशगान तुम्हारा करती, नयनन हूं नीर बहाती।
है लाज तुम्हारे हाथों, नहीं और सहारा मोहे ॥
५.हे दीनदयाल प्रभु जी, मैं दीनहीन दुखियारी।
उद्धार करो प्रभु मोरा, इक आस तुम्हारी मोहे ॥
६.शिव ओम् पुकार मैं करती, तुम सुन लो हे गिरधारी ।
दर्शन अपना करवा दो, यह ही है आशा मोहे ॥

(७७)

१.क्रोध लोभ को शुद्ध करो प्रभु, मन निर्मलता पा जाए ।
मन में तेरा प्रेम हो परगट, नाम प्रभु का आ जाए ।।
२.रक्षामाम् हे मेरे प्रभु जी, शरण तुम्हारी आया हूँ ।
काम मोह को मार भगाओ, मन की थिरता आ जाए ॥
३. बुरी वासना मन में बैठी, दुखदायक है बहुत बनी ।
आप्तकाम हो मेरा मनवा, प्रेम तेरा मन छा जाए ॥
४.एक भरोसा तेरा सच्चा, और भरोसे सब धोका ।

त्याग भरोसे सभी जगत के, एक भरोसा आ जाए ।।

५.तीर्थ शिवोम् दया हे प्रभुजी, दम्भी नीच शरण तेरी ।

अब तो कृपा करो हे देवा, जनम सफलता पा जाए ।।

(७८)

१. प्रभु मेरे हिरदय माहीं बिराजो ।

निर्मल चित्त कियो है मैंने, प्रभु आए विराजो ।।

२. शंकाएं सब दूर हुई हैं, तृष्णा क्रोध हटाए ।

मनवा तो अब शुद्ध भयो है, प्रेम से आय विराजो ।

३. तीर्थं शिवोम् है चरणी लागा, अब तो मुझे संभालो ।

आसन दियो बिछाए मैंने, आओ हृदय विराजो ।।

(७९)

१.मन तड़पे और अखियां बरसे, थिर न हृदय रहावे ।

श्याम बिना है मनवा मोरा, व्याकुल हुई हुई जावे ॥

२. सखिया बोलें झूला झूलन, मन तो लागत नाहीं ।

काह करूं बिन कृष्ण कन्हाई, मन में चैन न आवे ।।

३. कहां विलीन भया मेरा प्रियतम, अँखियन नजर न आवे ।

नयना खोजन ताकत हारे, पी बिन जी अकुलावे ॥

४. जाओ सखा कोई ढूंड के लाओ, मेरा प्रियतम प्यारा ।

प्यारे बिन बेहाल हुई मैं, मन न कहीं ठहरावे ॥

५. सद्गुरु पूरे बिन न प्रियतम, पकड़ सके न कोई ।

गुरु कृपा ही एक सहारा, जो प्रियतम दर्शावे ॥

६. तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, कृपा करो भगवन्ता ।

धीरज मेरा टूटा जावे, यत्न नहीं कर पावे ॥

(८०)

१.प्रभुजी तेरा एक सहारा ।

और सारे मिथ्या सब हैं, तू ही एक हमारा ॥

२.ठोक बजा कर सब जग देखा, अपना कोई न पाया।

स्वारथ के सब बंधु बांधव,निकला नहीं हमारा ॥

३.ज्यों चकोर है जाय चंद्र पर, तैसे तुम्हें निहारें ।

आय सहाय करो हे प्रियतम, मिला न कोई किनारा ॥

४.सारा जग बंधन में जकड़ा, छूट न पावे कोई।

तुम ही नित्य शाश्वत ऐसे, न कोई आर न पारा ॥

५.तुम आनंदी सुख के दाता, तुम्हीं जगत उपजाते ।

तुम में ही फिर जगत समाए, तुम हो अपरम्पारा ।।

६.तीर्थ शिवोम् कृपा हे गुरूवर, शरण तुम्हारी आया ।

दीन हीन को पार करो प्रभु, तुम ही तारन हारा ॥

(८१)

१.हे श्यामसुन्दर गिरधारी ।

कष्ट निवारक हे दुख भंजक, सुनिए हे बनवारी ॥

२.गोपिन रास रचावत हो तुम, माखन दही चुरावत हो तुम ।

मोरा मन नवनीत समाना, ले लो कृष्ण मुरारी ॥
३.गोपी तुमरे द्वारा पह आई, हृदय प्रेम का माखन लाई ।
इसको तुम स्वीकार करो प्रभु, सुन लो अर्ज हमारी ॥
४.रास तुम्हारी मधुर मनोहर, रस भीनी दुखहारी ।
अंग अंग है फड़कत मोरा, नाचन चाहूं मुरारी ॥
५.हो परगट मोर मन अंदर, दर्शन मोहे दीजो ।
तुमरी लीला है सुखकारी, पाप नसावनहारी ॥
६.मैं आई हूँ शरण तिहारी, तीर्थ शिवोम् पुकारूं ।
भक्ति भाव की किरपा कीजो, पत राखो बनवारी ॥

(८२)

१.हे समर्थ दाता दुख भंजन, शरण तुम्हारी आया ।
सुख के देवनहारे प्रभुजी, नाम ही मन को भाया ॥
२.सिमरन किए हे मेरे रघुवर, पाप ताप मिट जाते ।
निर्मल शुद्ध चित्त हो मेरा, ताही तुम पह आया ।।
३.नहीं कोई है मेरा तुम बिन, अशरण शरण तुम्हीं हो ।
राखो पत मेरी हरि प्रियतम, छोड़ ठौर सब आया ॥
४.करो कृपा मुझ पर हे स्वामी, भय भ्रम सब मिट जावे ।
आशा माया दूर हटे सब, दुआरे तुमरे आया ।।
५.गुरु ज्ञान गुरु सेवा पाऊं, मन निर्मलता साधूं ।
विपद हरो मेरी हे प्रियतम, आशा लेकर आया ॥
६.विनय करत शिव ओम् तुम्हारे, चरणों माहीं खड़ा है ।
मूढ़ हीन अज्ञानी पापी, करत पुकार है आया ॥

(८३)

१.मैं आयो शरण तुम्हारी राम ।
नाम दान की मुझ पर किरपा, हो जाय मेरा भी काम ॥

२.नाम भिन्न तुझ से है नाहीं, जीव उतारे पार ।

राम नाम की महिमा न्यारी, ले जावे वह धाम ॥

३.नाम जपे जो नित्य निरन्तर, अक्षय सुख वह पाता ।

अन्तिम समय तेरा ही सिमरन, मन न जाए दाम ॥

४.जो तेरा है नाम सिमरते, छोड़ जगत की माया ।

वही जगत में सुखी रहत हैं, बन जावें निष्काम ॥

५.तीर्थ शिवोम् दया प्रभु मोरे, तुम ही एक सहारा ।

लगा रहूं चरणों में तेरे, तेरा सिमरूं नाम ॥

(८४)

१.मैं आशा करते हारी, अब सुन लो हे गिरधारी ।
तेरा आने का राह निहारूं, है बीती आयु सारी ॥
२.जप तप साधन करते-करते, समय निकाला मैंने ।
अब है टूटा धीरज मेरा, मेरी अर्ज सुनो बनवारी ॥
३.निस दिन तेरा रस्ता देखूँ, तुम नहीं आए अब तक ।
मैं डोल रही दुविधा में, अब आ जाओ गिरधारी ॥
४.भव जल में डूब रही हूँ, न दिखे कोई अपना ।

अब मेरी सुध लो प्रियतम, हूं दीन हीन दुखियारी ॥

५.शित ओम् मैं तुम्हें पुकारूँ, तुम सुन लो विनय हमारी।
दर्शन दीजो दुखिया को, मैं होऊँ तभी सुखारी ॥

(८५)

१.चरणों में रहने दीजो, मुझको उठा न लीजो ।
आया शरण मैं तुम्हारी, मुझको तो पार कीजो ॥

२.तम में पड़ा हुआ हूँ, विषयों घिरा हुआ हूँ ।
बंधन में हूं मैं जकड़ा, बेड़ा तो पार कीजो ॥
३.कोई नहीं सहारा, किसको पुकारूँ जा कर ।
आया हूँ दर पह तेरे, वापस फिरा न दीजो ॥
४.सन्मुख है गहरा सागर, उतरूँ पार मैं कैसे।
मेरी भी नैया प्रभुजी, साहिल पह कर दीजो।।
५.तुम ही एक सहारा, तुम एक ही हो मेरे ।
सुनता न कोई मेरी, अपना बना ही लीजो ।।
६.शिवोम् आ गया हूँ, मैं छोड़ सारी दुनिया ।
तुम ही मेरे स्वामी, रिश्ता यही निभाजो ।।

(८६)

१.मैं करत पुकार रही ।
टेर सुनो मेरी आय प्रियतम, राह निहार रही ॥

२.नयना सूजे अविरल धारा, हिरदय कल है नाहीं ।
आओ रसिया दर्श दिखाओ, खड़ी निहार रही ॥

३.तन मन मेरा प्रेम अगन में, जलता घास की नाईं ।
आओ अगन बुझाओ प्रभुजी, तुम्हें निहार रही ॥
४.जग में भावे न मन को, विष सम भोग है लागे ।
यह मनवा तो तुम संग राचा, तुम्हें पुकार रही ॥
५.हिरदय फड़कत पाओं डोलत, सुध भी रही न तन की।
प्रभु दर्शन बिन चैन न आवे, मन समझात रही ।
६.तीर्थं शिवोम् है तड़पे मनवा, रोम रोम अकुलाए ।
अब तो अर्ज सुनो है माधव, बलि बलि जाए रही ॥

(८७)

१.अब तो मैं द्वारे आए पड़ी।
लोक लाज सब त्याग जगत की, तुमरे घर में आय खड़ी ।
२.चाहे राखो मार भगाओ, मैं तो शरण तुम्हारी ही ।
अब न छोड़ूँ लड़ मैं तुमरा, तुमरे लिए ही आन पड़ी ।।
३.भाई बंधु सकल परिवारा, छोड़ा सब तुमरे कारण ।
अब मैं शरण तुम्ही से मांगत, मैं दुखिया हूं आन खड़ी ।।
४.तीर्थ शिवोम् मैं आई तुमरे, चरणों में सिर रखने को ।
मैं पापिन कुटिला नारी हूं, शरण में तुमरे आय पड़ी ।।

गुरुदेव

(८८)

१.तीर्थ विष्णु प्रभु अन्तर्यामी, कृपावन्त हो जीवों पर ।
तुम हो अनंत दया के सागर करो अनुग्रह जीवों पर ।।
२. साधन निष्ठ ज्ञान सागर हो, बहुमुखी प्रतिभा स्वामी ।
दया भाव की वर्षा कर दो, हम अज्ञानी जीवों पर ॥
३. शक्तिमान हो, विष्णु रूप हो, माया से हो परे तुमी ।
भाव हमारे निर्मल कर दो, कर दो वर्षा जीवों पर ।। .
४.तीर्थ रूप हो निरहंकारी, ज्ञानी ध्यानी सभी तुमी ।
मन हमारा मलीन है चंचल, निर्मल दान हो जीवों पर ।।
५.शरण में आए तुमरी हम हैं, जग से बहुत दुखी हो कर ।
आशा तृष्णा दूर करो सब, कृपा करो हम जीवों पर ।।
६.तीर्थ शिवोम् विनय गुरु आगे, विनय सुनो प्रभु दुखियों की ।
चरण पड़े हैं शरण में आए, दया दृष्टि हो जीवों पर ।।

(८९)

१. काल न देखे गुरु भक्तन को ।
तृष्णा रहत न मन के माहीं, जावन नाहीं पुनर्जनम को ॥
२. गुरु शक्ति की किरिया न्यारी, शुद्ध करत है जो कर्मों को ।
कर्म विहीन वासना नाहीं, फिर क्यों देखे काल बली को ॥
३.अविनाशी से हो प्रीति जब, काल डरत है ता जन पासे ।
निर्भय विचारित संशय बिन वह, समझत न कुछ काल बली को
४.शक्ति की किरपा पाओ, हरि सिमरन दिन राती कर लो ।
काल चक्र छुटकारा होए, निर्भय होत है काल बली को ।।

५. गुरु की शरण गहो मन मोरे, तीर्थ शिवोम् पुकारत तो को।
गुरु शक्ति ही एक सहारा, छोड़ो बंधन काल बली को ।।

(९०)

१. हो री कोई ऐसा सद्गुरु होए ।
प्रभु प्रापत हो कीना जा ने, पूरण ज्ञानी होए ।
२. ता के नाम दान से मेरी, अन्तर शक्ति जागे ।
अन्तर किरिया करे अलौकिक, मन निर्मल हुई जाए ।।
३. मन शीतल हो, तन शीतल हो, भाव भक्ति मन जागे ।
थिरता अन्तर हो परकाशित, मन चंचलता जाए ॥
४. तड़प रही मैं प्रभु के कारण, कृपा करेंगे सोई ।
भगवद किरपा एक भरोसा, सद्गुरु प्यारा आए ।।
५. सद्गुरु भेटे मन सुख होए, दुख सकल ही भागे ।
सद्गुरु कृपा अनोखी वस्तु, भव बंधन कट जाए ॥
६. तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, तुमरी गति है न्यारी ।
करत कृपा शरणागत पर हो, विपदा सकल हटाए ।।

(९१)

१. राम करी किरिया मो पह जो, सतगुरु देव दियो प्रगटाए ।
मन की इच्छा पूरण होई, सद्गुरु देव दियो दिखलाए ॥
२. बड़े भाग्य जो सद्गुरु पाया, जनम जनम का पाप नसाया ।
अब तो सद्गुरु सन्मुख मेरे, जो देते सब कष्ट मिटाए ।।

३. गुरु चरनन जाका मन लागे, मन में भाव शरण का जागे।
तृष्णा अगन न देत जलाई, पाप कर्म हैं देत भुलाए।।
४. सद्गुरु देव संग मैं पाया, निर्भय नाम हरि का जपया।
सागर पार तरा ही सहजे, हरि का रंग है दियो चढ़ाए॥
५. तीर्थ शिवोम् धन्य गुरु देवा, जैसा मन वैसा ही मेवा।
अब है राम शरण लिव लागी, शंका मन की दियो मिटाए॥

(९२)

१.सदगुरु किरपा कीनी मो पर, परमारथ मैं पाया।
प्यार में धीरज प्रीति पाई, जग से ध्यान हटाया॥
२. सद्गुरु वाणी होत संजीवन, लीला अपरम्पारा।
मन में प्रभु प्रेम है भरती, मन निर्मलता पाया॥
३. अमृत रूप गुरु उपदेशा, नाश विकार करे जो।
जीव जात है अमर देश में, रोकत नाहीं माया॥
४.अमृतवाणी पान करे जो, मन बुद्धि चित लाए।
जीवन उसका जाए बदला, जग नाहीं भरमाया॥
५.जपत निरन्तर गुरु उपदेशा, मगन ताही हो जावे।
मन का मैल सभै धुल जावे, निर्मल होवे काया।।
६. तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, वाणी मन में धारूं।
लगा रहूँ साधन में हरदम, छोड़ जगत की माया॥

(९३)

१. भ्रम में डूबा सब संसारा।

जो करना सो करत है नाहीं, विरथा करत पसारा।।

२. सद्गुरु प्रेम हरि का सिमरन, शुद्धि यही उपाय।

ता से मन निर्मलता पाए, कटता सभी विकारा।।

३. जब लगि ज्ञान गुरु है नाहीं, बिरथा सभी उपाय।

समय अकारथ अपना खोए, नहीं जात हंकारा॥

४. सद्गुरुदेव कृपा हो मो पर, शरण तुम्हारी लागूं।

जपूँ निरन्तर नाम हरि का, दूर हटे अंध्यारा॥

५. पापी दम्भी हठी कुकर्मी, बना रहा जग माहीं।

तीर्थ शिवोम् अनुग्रह गुरुवर, अनुनय करत बेचारा॥

(९४)

१. हरि ने जीव सभी प्रगटाए।

माता पिता भगिनी सुत नारी, वा ने सभी बनाए।।

२. हरि मेले संबंध सभी का, इक दूजे को भाए।

होत वियोग जभी है कोई, तो मनवा तड़पाए।।

३. जात भूल है मेलन हारा, अपने सुख में लागे।

जीव बना ऐसा अभिमानी, राग लिप्त हुई जाए।।

४. प्रभु ही रूप धरे सद्गुरु का, जीव पह किरपा करता।

अन्तर्ज्योति कर परकाशित, संशय देत हटाए।।

५. जय जय जय जय सद्गुरु देवा, मैं ताकी बलिहारी ।
भर्म हटाया तृष्णा काटी, देवत मोह छुड़ाए ।।
६. तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, मैं अनजान हूं बालक ।
तू ही जग विस्तार करे है, आप ही लेत मिलाए ।।

(९५)

१. परम दयालु सद्गुरु देवा ।
पाए जीव संग जब ताका, तभी भजन है देवा ।।
२. प्रभु का नाम है ऐसा अमृत, पार करे जीवों को ।
साध संग से ही मिलता, ऐसा दुर्लभ देवा ।।
३.जो जन करत हैं साधु संगत, सिमरे नाम प्रभु का ।
आवगमन का चक्र कटत है, पावे आदर देवा ।।
४. प्रभु कृपा के बिना न होवत, सेवा गुरु चरण की ।
तो ही जीव करत हैं सेवा, पावे मुक्ति देवा ॥
५.तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुवर की, कट जाए फंदा मेरा ।
सिमरूं नाम सदा सुख दायक, भक्तिभाव से देवा ।।

(९६)

१. माया सघन होत बहु भारी, अहंकार मिल जाता ।
व्याधि होय जीव दुख पावे, मन का चैन है जाता ।।
२. होए जीव आकर्षित जग में, सुध बुध मारी जाती ।
धर्म अधर्म विचार नहीं कुछ, जग में ही मन जाता ॥

३. पावे औषध गुरुदेव से, हरिनाम जो देवे ।
अहंकार कट जावे मन से, माया साथ बह जाता ॥
४.तृष्णा है विकराल जगत में, करे आतंकित हरदम ।
गुरु ज्ञान है ऐसी औषध, भय सब ही मिट जाता ।।
५. काम लोभ क्रोध अति भारी, देते दुख घनेरे ।
गुरु भक्ति हरि सिमरन से ही, सब विकार हट जाता ।।
६. तीर्थ शिवोम् है ज्ञान उपाय, मानस रोग मिटावे ।
जग आकर्षण ममता भारी, गुरु ही सकल मिटाता ॥

(९७)

१. गुरु बिन परमारथ न होए ।
जतन अनेकों जीव करत है, पर अभिमान न खोए ।।
२. प्रभु बना है ऐसी उलझन, कहाँ उसे जा खोजें ।
गुरुदेव ही एक सहारा, ईश्वर देत लखाए ।।
3. अहं बना व्यवधान है भारी, रहे वह रस्ता रोके ।
गुरु ही अहं गलाए सारा, गुरु ईश्वर प्रगटाए ।।
तीर्थ शिवोम् कृपा गुरु देवा, मैं हूं शरण तिहारी ।
करो उजाला अन्तर माहीं, ईश्वर दो दिखलाए ।।

(९८)

१. जनम मरन में जीव है उलझा, बिन गुरु गति न होई ।
गुरु मिला जिस बड़भागी को, ताही छुटकारा होई ॥
२. गुरु मिले प्रभु प्रीतम प्यारा, मन में आए विराजे ।

चित्त होत है निर्मल ताका, अहंकार मिट जाई ॥
३. गुरु चरणी मन अपना राखो, हिरदय भाव है राखो ।
प्राप्त होत है कृपा गुरु की, भव बंधन कट जाई ॥
४. गुरु प्रदान नाम करत जो, सो चेतन परकाशित ।
नाम सिमर गुरु शक्ति जाग्रत, प्रकट आनन्द है होई ।।
जैसा यत्न करे जग कारण, वैसा भ्रम जो होवे ।
ता जन पार होय गुरु किरपा, जनम सफल हो जाई ।।
६. तीर्थ शिवोम् है मृत्यु सन्मुख, अपनी ओर बुलाए ।
कृपा करो हे मेरे गुरुवर, सकल विपद कट जाई ॥

(९९)

१. गुरु देव मेहर करना, नादान मैं बालक हूं ।
कुछ समझ नहीं मुझको, नादान मैं बालक हूं ॥
२. आया तेरे दर पह हूं, इक आस लिए मन में ।
किरिपा ही मैं चाहता हूं, नादान मैं बालक हूं ॥
३. मुश्किल है बहुत जीवन, मारग न कोई सूझे ।
भटका हुआ राही हूं, नादान मैं बालक हूं ॥
४. शिव ओम् कृपा मुझ पर, हो जाए कृपा तेरी ।
मैं दर का भिखारी हूं, नादान मैं बालक हूं ॥

(१००)

१.न कोई जग में जीना जाने ।

जग ममता में डूबा ऐसा मरना ही पहचाने ।।

२. पल पल जीवे पल पल मरता, रीति यही जगत माहीं ।

भय मृत्यु का जब है छूटे, तब वह जीना जाने ।।

३. निस दिन लीन हरि चरणों में, सेवा कर्म कमावे ।

मन निर्मल होवे तो तब ही, हरि को सन्मुख जाने ।।

४.गुरुदेव ही किरपा करते, चेतन नाम है देते।

गुरु शक्ति का मारग खुलता, प्रभु को अन्तर जाने ।।

५.मैं और मेरा तेरा सब ही, छूट सभी है जाता ।

बुद्धि विकसित जीने की तब, तब जीने को जाने ॥

६. तीर्थं शिवोम् कृपा गुरुदेवा, जीना मुझे सिखा दो ।

पड़ा रहूँ चरणों में तेरे, ज्ञान यथार्थ पहचाने ।।

(१०१)

१.लोग कहें तीरथ जावन को, मैं गुरु तीरथ पाया ।

जिसने तीरथ अन्दर खोला, मन में ही सुख पाया ॥

२.ब्रह्मा विष्णु और महेशा, तीनों उस तीरथ में ।

मल मल न्हाऊं अन्तर तीरथ, तीर्थ गुरु मन भाया ॥

३. विष्णु तीर्थ ही तीर्थ रूप हैं, अन्तर तीरथ परगट ।

अन्तर तीरथ छोड़ क्यों भटकत, काहे मन भरमाया ।।

४. तीर्थ शिव कृपा गुरुदेवा, मन चरणों में लागे ।

विष्णु तीर्थ अन्तर परकाशित, अन्तर आनन्द पाया ॥

(१०२)

१. जय गुरुदेवा, जय करुणाकर, प्रणतपाल अघहार हरे ।

जय अविनाशी जय सुख राशि, मद् हारी सुखसार हरे ।।

२. तुम हो दीन दयालु गुरुवर, कृपा करो हम दीनन पर ।

दयावन्त हो क्षमाशील हो, निराकार साकार हरे ।।

३. कष्ट हमारा हर लो प्रभु जी, शरण तुम्हारी पड़े हुए।

अशरण शरण दयालु स्वामी, जय जय प्रेमागार हरे ।।

४. तुम दुखियों का कष्ट हरत हो, दुखी न हम सा कोई भी ।

जग विषयों में पड़े हुए हैं, जय जय जय सुख सार हरे ॥

५. प्रकट हमारे अन्दर होकर, तम का नाश करो स्वामी ।

पाप राशि को निर्मल कर दो, मंगलमय जगतार हरे ।।

६. तीर्थ शिवोम् विनय चरणों में, क्षमा करो भूलें हमरी ।

हम हैं बालक तुमरे प्रभुजी, तुम हो अनन्त दातार हरे ॥

(१०३)

१. मैं गुरु चरनन में आय गई ।

लोभ मोह सब त्याग जगत का, मन की यह गति भाय गई ।।

२. कौन किसी का, किसी कौन का, झूठे जग के नाते ।
मन तो गुरु चरनन में लागा, लोक लाज तज आय गई ।।
३. अब तो मन राता चरनों में, भय न मन में कोई ।
छकी रहत हूं गुरु प्रेम में, तज तृष्णा सब आय गई ।
४. तीर्थ शिवोम् मगन भई ऐसी, दूजे ठौर न मन जाए ।
अब तो लीन गुरु चरनों में, चरनों में मन लाए रहीं ॥

(१०४)

१. जब कृपा करी गुरु देवा, है मिले पति तब मेरा ।
सब विषय वासना भागी, जीवन में हुआ सवेरा ॥
२. न दीखे दूजा कोई, सर्वत्र समाना वह ही ।
है दृष्टि बदली मेरी, है बदला जीवन मेरा ॥
३. गुरुदेव ने दुष्ट भगाए, अन्तर्शत्रु संहारे ।
मन निर्मल हुआ है मेरा, सब छूटा मेरा तेरा ॥
अब दोष कहीं न दीखे, वह एक समाया सब में ।
है अन्तर्मुख आई, मन लीन हुआ है मेरा ॥
गुरुदेवा तुमरी जय हो, किरतारथ मुझको कीना ।
है जीवन सफल बनाया, उद्धार किया है मेरा ।।
६. है तीर्थ शिवोम् आनन्दित, सुख ही सर्वत्र विराजे ।
चिन्ता तृष्णा सब छूटी, प्रभु पति मिला है मेरा ॥

(१०५)

२. गुरु कृपांजन दीजो, अन्तर दृष्टि खोले।
माया दूर हटे या मन सों, चेतन में ही डोले॥
२. चेतन ही सर्वत्र समाना, बिन चेतन न कोई।
चेतन चेतन ही सब दीखत, राम राम मुख बोले॥
३. सकल विकार विनाश होत हैं, चिन्ता नाहीं मन में।
चिदाकाश में विचरण करता, उड़ता बिन पर तोले॥
४. तीर्थं शिवोम् कृपा गुरु देवा, जल किरपा बरसा दो।
राम ही सब जग व्यापक दीखे, गांठ दो मन की खोले॥

(१०६)

१. गुरुदेव सहारा तेरा है, और सहारा नाहीं।
तुमरे बिन कोई मेरा, है और अधारा नाहीं।।
२. है डोलत नैया मोरी, डगमग हिचोले खाती
तुमको ही रहा पुकारत, पतवार है तुम बिन नाहीं ।।
३. मैं जनम जनम के संचित कर्मों से घिरा हुआ हूं।
निर्मूल तुम्हीं करनारे, है आशा दूसर नाहीं॥
४. मैं भटकत भटकत भटकत, आया हूं शरण तिहारी।
तुम भी ठुकरा जो दोगे, रखवारा कोई नाहीं॥
५. तूफान में घिरा हुआ हूं, मन चंचल अति है मेरा।

थिर होय नहीं में पाऊं, आदर्श है तुम बिन नाहीं ॥

६.शिव ओम् पड़ा चरणों में, है विनय करत कर जोड़े ।

चरणों में सिर हूं रखता, तुम बिन रक्षक है नाहीं ॥

(१०७)

१. धारूँ चरण-कमल गुरु देवा ।

और न चाहिए मो को कुछ भी, यही मिला है मेवा ॥

२.जगत प्रपंच है मिथ्या सब ही, दुखी करत है सबको ।

गुरु चरण केवल सुखदायक, न कुछ लेवा देवा ॥

३. गुरु चरणन ही मन लागा है, वहीं अनन्द मिलत है ।

गुरु चरणों से लगी रहूं मैं, गुरु चरणन ही सेवा ॥

४. तीर्थ शिवोम् बड़े बड़भागी, गुरु चरण जो लागे ।

सेवा भगति सुख चरणों में, सब कुछ है गुरुदेवा ॥

(१०८)

१.मातंगी है जागी घर में, लीला करत नयारी ।

जल में करत विहार वह रहती, जाय नहीं विचारी ॥

२.पवन अगन आकाशा न छोड़े, वा में क्रिया करत है ।

अजब अलौकिक उसकी महिमा, जो नहीं जात वखारी ।।

३.चढ़ती ऊपर निर्मल करती, सरकत सरकत जाती ।

अनुभव करती दिव्य प्रकाशित, जो होवत हितकारी ।।

४.धरती जल में, जल अग्नि में, लीन है होता जावे ।

अगन वायु आकाश निरन्त,र होवत जात मिलारी ॥
५.जीव भाव चैतन्य मिलावे, चेतन आतम माहीं ।
मनवा करत निरुद्ध वह ऐसा, आतम माहीं सुखारी ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरु देवा शक्ति जाग्रत कीना ।
माया टूट मातंगी जागे, सुख हो आत्म मझारी ।।

(१०९)

१. गुरु कृपा जब परगट होए, राम रतन मन माहीं ।
जनम जनम के कल्मिश काटे, मुक्त होए छिन माहीं ॥
२. गुरु सेवा कर, राम सिमर मन, गुरु का संग करीजे ।
सद्गुरु प्रभु को अनुभव कीना, तारे पल ही माहीं ॥
३. गुरु सेवा बिन मूरख मनवा, बना तू मूढ़ रहीजे ।
माया मोह में रहे फसत है, पड़े जगत के माहीं ॥
४.तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, राम नाम प्रगटाओ ।
तमातीत मन हो परकाशित ध्यान चरण के माहीं ॥

(११०)

१. गुरु ऐसे बलिहारी जाऊं ।
रहत निरन्तर आतम सुख में, माथे चरण लगाऊं ॥
२. नहीं कहत जो ध्यान करन को, प्राण न रोकन कहता ।
ज्ञान अवस्था रहत निरन्तर, ता के मंगल गाऊं ॥
३. जप तप तीरथ गौण भए जा, शक्ति क्रिया निहारत ।
सर्व जगत अम्बा ही दीखत, ता के गुण मैं गाऊं ॥

४. छोड़े और छुड़ाए जग सों, मोह बना जो भारी ।
आतम लाभ कमावे अन्तर, मन में ताही बिठाऊं ॥
५. मार्ग बताए सहज क्रिया का, अन्तर जीव समाया ।
करत सदा ही मंगल जग का, चरण ता ही मन लाऊं ॥
६. तीर्थ शिवोम् मैं ऐसे सद्गुरु, गुरु कृपा से पाया ।
जय हो जय हो सद्गुरु देवा, मगन आनन्द रहाऊं ॥

(१११)

१. जब से चरणीं सद्गुरु आया, और नहीं मन भाया ।
मन है भया आनन्दित ऐसा, चरणों में सुख पाया ॥
२. कई मारग हैं, देव अनेकों, कहते बहुत उपाय ।
मेरे मन तो सद्गुरु भाया, मिथ्या सारी माया ॥
३. सद्गुरु देव है जगत रचाया, करत वही प्रतिपाला ।
सब देवों में वह ही व्यापे, तत्व यही मैं पाया ॥
४. इधर उधर मनवा क्यों जाये, गुरु का नाम अराधे ।
लगा रहे गुरु चरणों माहीं, यही है मन भाया ॥
५. तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, चेतन ब्रह्म सरूपा ।
ता ही में मन रमा रहत है, गुरुदेव मन भाया ॥

(११२)

१.गुरु सम जग में दूजा नाहीं ।
बंधन देत छुड़ाए अन्तर, करे सो दूजा नाहीं ॥

२.न कुछ लेत जीव से वह है, ता कल्याण करत है ।
जग कल्याण का भाव है ऐसा, और किस पह नाहीं ॥
३.जग में रहे अकर्ता होकर, सम दृष्टि सब माहीं ।
हो धनवान या निर्धन कोई, ता में अन्तर नाहीं ॥
४.वैरी मित्र से एक समाना, प्रेम करत है सब सों ।
हृदय उदार सुआमी सद्गुरु, वह डोलत है नाहीं ।।
५.प्रभु से मिला रहे वह हरदम्, अन्तर दृष्टि ऐसी ।
अन्तर बाहर एको देखे, को ऐसा जग नाहीं ॥
६. तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, बालक हूं मैं तेरा ।
किरपा दृष्टि राखो मो पर, रक्षक और है नाहीं ॥

(११३)

१.गुरुदेव नहीं तुमरे बिन कोई ।
का के दर करूं पुकार, सुनत नहीं कोई ॥
२. देख भाल सारा जगत, अन्त आई तुमरी शरण ।
दीजो नाहीं मोहे छोड़, मेरो नहीं कोई ॥
३. विषयों ने तंग कीनो, जगत मोह भंग कीनो ।
अब सहारा नाहीं होई, पूछता न कोई ॥
४.हूं शिवोम् विनय करत, लाज त्याग आई शरण ।
चरण हूँ तुमार पड़त, दूसरो न कोई ॥

(११४)

१. प्रियतम सदा सत्य है रहता ।

मिलता नाहीं, दिखता नाहीं, अपने में छुप रहता ॥

२. गुरु मारग ही ज्ञान उपाय, साधन सतत् करे जो ।

मन है जब निर्मलता पाता, हरदम पास है रहता ।।

३.है जन्मे मरे न मेरा प्रियतम, काल से रहे अछूता ।

उसकी गति जो मानव पाता, सन्मुख उसके रहता ।।

४. सिमरन कर तू हरदम मनवा, ध्यान गुरु का कर ले ।

प्रियतम अन्दर बसत है तेरे, तू भरमाया रहता ।।

५.बीती सो तो बीत गई है, अब जो समय है बाकी ।

अपने अन्दर खोज प्रभु को, जो तेरे संग है रहता ॥

६.मैं तो पाऊं अपना प्रियतम, मन की मैल हटाऊं ।

तीर्थ शिवोम् गुरु की सेवा, प्रियतम हर्षित रहता ।।

(११५)

१.मेरे कलेजड़े में तीर लगा सजनी ।

सद्गुरु देव कृपा की मो पर, तड़पत जात हूं मैं सजनी ॥

२. ठौर ठौर पिया को देखूं, नयनन प्रेम समाया ।

अब तो पिय बिन इक पल नाहीं, सहन भी मो को है सजनी।।

३. हरदम पिय मेरे संग बिराजे, छोड़त नाहीं पल भी ।

अखियां न थाके पिय दर्शन, बावरी मैं तो भई सजनी ॥

४. तीर्थ शिवोम् यह मिलन पिया का, गुरु किरपा से पाया ।

मनवा हरदम मस्त वनो है, देखत हरदम पी सजनी ॥

(११६)

१.सो ही तप है वह ही जप है, जो सद्गुरु मन भावे ।
जप तप जब गुरु ज्ञान विहीना, सब ही विरथा जावे ॥
२.जो आज्ञा में रहत निरन्तर, वह ही आदर पावे।
मन के पाछे वाले जगत में, वह अपमान ही पावे ॥
३. अहंभाव जो त्यागे मन सों, सरल चित्त हुई जावे।
सद्गुरू लीन हुआ जन सोई, गुरु भक्ति वह पावे ॥
४.विरला जन ले, गुरु उपदेशा अहं ही आड़े आवे ।
गुरूजी को यह आदर देई, सो जन ही यह पावे ॥
५.मन विकार है रस्ता रोके, जाना बहुत कठिन है ।
निश्चय गुरु चरणों की सेवा, तो ही पार हुई जावे ॥
६.तीर्थ शिवोम् कृपा गुरु देवा, श्रद्धा मन में राखूं ।
लगा रहूँ चरणों की सेवा विकार नहीं भरमावे ।।

(११७)

१.मैं सद्गुरु पाया कीमत न पाई ।
हीरा पाया मांगने वाले, हीरे का ज्ञान न पाई ॥
२.ऐसे जग में शिष्य अनेकों, पा के नहीं वह पाते ।
कोरे कागज नाईं रहते, परमारथ न पाई ॥
३.ऐसे मन्द मूढ़ अज्ञानी, मारे मारे फिरते ।
दंभ पाखण्ड वह करते रहते, ज्ञान सकें न पाई ।।
४.तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, चरणी मोहे राखो ।
लगा रहूँ सेवा में नित ही, प्रभु प्रेम लूं पाई ।।

(११८)

१. गुरु सेवा में रहत निरन्तर, राम भजन वह करते ।
आज्ञाकारी रहत गुरु के, भोगों से वह डरते ॥
२. नित्य साधना गुरु संग है, अन्तर गुरु को देखें ।
राम नाम को सतत् निरन्तर, मन में धारण करते ।।
३. मन में विषय विकार नहीं है, काम क्रोध भी नाहीं ।
विषयासक्ति त्याग जगत की, सेवा कर्म हैं करते ।।
४. प्राप्त होत परमारथ उनको, जग का बंधन छूटे ।
होत प्रकाशित परम धाम है, मोक्ष गति वह पाते ।।
५.जो जग में आसक्त बने हैं, गुरु विमुख हैं सोई ।
विषयों माहीं लीन बने हैं, विष ही हैं वह खाते ॥
६. तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, अपने संग मो राखो ।
ध्यान तुम्हारा मन में हरदम, सोते उठते खाते ॥

(११९)

१. गुरु बाण चलाया कैसा है, मस्त किया हिरदय बींधा ।
है दृष्टि बदल गई मेरी, उपकार किया जीवन सींचा ॥
२. चंचलता मन की क्षीण हुई, और विषय विहीन हुआ मनवा ।
आशा तृष्णा सब लीन हुई, है विषयों को बाहर खींचा ॥
३. गुरु बाण लगा हिरदय माहीं, हिरदय का भाव बदल डाला ।
मन की सीमाएं सब टूटी, है भोगों को मन से खींचा ॥
४. मेरा तेरा सब ही छूटा, अब आतमराम सभी दिखता ।
गुरुदेव कृपा मो पर ऐसी, कर दीना वासना को नीचा ॥

५. शिव ओम तुम्हारी जय गुरुवर, है नवजीवन परदान किया।
अब मन आनन्द समाया है, जीवन फुलवाड़ी को सींचा ।।

(१२०)

१.गुरू प्रेम में रंग जात जब, पाता जीव प्रभु घर को।
मन में आशा जगे गुरु की, जाए जीव प्रभु दर को ॥
२.मन में सिमरन जाप गुरु का, देखे सुने गुरु का धाम।
राम ही भाव यह देखनहारा, जाता राम ही के घर को ।।
३.राम ही गुरु रूप जग माहीं, करत कृपा जो जीवों पर।
ऐसे जन उत्तम कहलाते, जाते राम प्रभु घर को ॥
४.कभी न बिसरे कभी न भूले, हरदम गुरु का ध्यान करे।
गुरु ध्यान है करते करते, जाता गुरु ही के घर को ।।
५.धन्य जीव जो गुरु सेवक हैं, कृपा प्रभु की वह पाते।
मन उपराम जगत विषयन सों, जाते प्रभु के ही घर को ॥
६.नीच पाखण्डी भक्ति मागें, गुरुदेव किरपा कीजो।
तीर्थ शिवोम् है चरणों माहीं, जावे राम ही के घर को ॥

(१२१)

१.मैं सद्गुरु के घर जाऊंगी।
सद्गुरु देव परम हितकारी, जाय ताही मनाऊंगी ।।
२.विष्णु तीर्थ प्रभु अन्तर्यामी, घट घट से अवगत है।
मेरे मन की जानत सब ही, ताही शीश नवाऊंगी ।।

३. सद्गुरु मेरा प्रभु का सेवक, पार करे जीवों को ।
मुझ पर भी उपकार की दृष्टि, मन में भाव मैं लाऊंगी ॥
४. ताकी शरण जीव जो जाता, ता पर कृपा करत है ।
दर पर मैं भी याचक बनकर, आगे हाथ फैलाऊंगी ।।
५. काम क्रोध माया मद छीजे, ता की इक दृष्टि से ।
मन निर्मलता कारण मैं भी, भीख मांगने जाऊंगी ॥
६. तीर्थ शिवोम् शरण में आई, सद्गुरु किरपा तेरी ।
लोभ मोह मेरा सब जाए, आतम लाभ कमाऊंगी ॥

(१२२)

१. गुरु साचा भ्रम का नाश करे ।
दूर करे अन्तर की तृष्णा, माया फास हरे ।।
२. मन को मोड़े प्रभु प्रेम में, जग से दूर हटाए ।
आसक्ति के बदले सेवा, यह उपदेश करे ।।
३. सहजा भाव करे परकाशित, सहज ही प्रेम दृढ़ावे ।
मनवा मोड़ प्रेम के ताईं, मारग सरल करे ॥
४. सद्गुरु देव की ऐसी किरिपा, दर्शन से ही भक्ति ।
माया टूट शिथिल हुई जावे, सिमरन प्रकट करे ॥
५. भटकत भटकत यह फल पाया, गुरु शरण में आया ।
भेद खुला तब मो पर ऐसा, प्रेम ही वरण करे ॥
६. तीर्थ शिवोम् कृपा गुरु देवा, कृपा वृष्टि बरसा दो ।
डूबा रहूं नाम में निसिदिन, गुरु ही पार करे ।।

(१२३)

१. मेरे सद्गुरु दीपक दीना।
मारग तो अब हुआ प्रकाशित, सकल उजागर कीना।।
२. गुरु शक्ति हुई प्रकट क्रियारत्, अनुभव देत अलौकिक।
मन की मैल है मिटती जाए, अनूप अनुग्रह कीना।।
३. चेतन भाव हुआ है जाग्रत, जड़ता सब ही भागी।
सीमाएं अन्तर की टूटीं, अनत मोहे कर दीना॥
४. आनन्द ही सर्वत्र बिराजे, शोक मोह कछु नाहीं।
सर्व व्यापक सर्व नियन्ता, मो पह परगट कीना॥
५. मन आनन्द समाता नाहीं, दृष्टि भई अनन्ता।
मोर तोर सब झगड़े छूटे, सभै एक कर दीना॥
६. तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुवर की, मन में भाव न दूजा।
सभी जगह वह एक समाया, अनुभव मो यह दीना।।

(१२४)

१.विष्णु तोर्थम् विष्णु तीर्थम्, विष्णु तीर्थम् बोले जा।
जय गुरुदेवा जय गुरुदेवा, जय गुरुदेवा बोले जा॥
२.विष्णु तीर्थ हैं बड़े कृपालु, कृपा दृष्टि सब पर करते।
गुरुदेव की डोर पकड़ कर, विष्णु तीर्थम् बोले जा।।
३.जग में जीव है सुख दुख पाता, अनुभव होत आनन्द नहीं।
देत दिखाए अन्तर सुख वह, विष्णु तीर्थम् बोले जा।।
४.विष्णु तीर्थ चैतन्य सुआमी, चेतन चेतन कर देते।

चेतन का आनन्द लूटता, विष्णु तीर्थम् बोले जा ।।

५.विष्णु तीर्थ चैतन्य विराजे, अनुभव देते भक्तों को ।

राम नाम की लूट मची है, विष्णु तीर्थम् बोले जा ॥

६.विष्णु तीर्थ हैं प्रकट प्रकाशित, जीव जो अनुभव कर लेता ।

विष्णु तीर्थ हैं घट घट माहीं, विष्णु तीर्थम् बोले जा ।।

७.विष्णु तीर्थ हैं तीर्थ स्वरूपा, पापों को वह धो देते ।

स्नान तीर्थ तू कर ले मनवा, विष्णु तीर्थम् बोले जा ॥

८.तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, आया शरण तुम्हारी हूं ।

निर्मल मन मेरा भी कर दो, विष्णु तीर्थम् बोले जा ।।

(१२५)

१. जय विष्णु तीर्थ देवा, जय परम पूज्य देवा ।

जय गुरुदेव देवा, जय विष्णु तीर्थ देवा ॥

२. अज्ञानी जीव हैं हम, चरणों में पड़े हुए।

उपकार करो देवा, जय विष्णु तीर्थ देवा ॥

३. हम पड़े हुए जग में, हैं सुख दुख सहते हम ।

उद्धार करो देवा, जय विष्णु तीर्थ देवा ॥

४. हम शरण में आए हैं, हैं विनय करत स्वामी ।

तुम पार करो देवा, जय विष्णु तीर्थ देवा ॥

५. हम फसे हुए जग में, कुछ कर न पाते हम।

भव सागर पार करो, जय विष्णु तीर्थ देवा ॥

६. शिव ओम् लगा चरणी, है दीन हीन भारी ।
डूबी जाती नैया, जय विष्णु तीर्थ देवा ॥

(१२६)

१. गुरुदेव न भुलाना, बालक तो मैं हूं तेरा ।
हिरदय में रखना मुझको, अंजान हूं मैं तेरा ॥
२. साधन न कर मैं पाया, सेवा भी नाहीं कीनी ।
पर तुम उदार मन से, कर दो मेरा निबेरा ।
३. भगवद् स्वरूप तुम हो, अच्छा बुरा न चीह्नो ।
कर दो क्षमा मुझे तुम, नादान हूं मैं तेरा ॥
४. वर्षा कृपा की कर दो, आज्ञा करूं मैं पालन ।
जीवन सुधार लूं मैं, नासमझ हूं मैं तेरा ॥
५. आया शरण तुम्हारी, आशीष तुमरा पाने ।
कर दो निहाल मुझको, आखिर हूं शिष्य तेरा ॥
६. तुमरे सिवा न कोई, जग में कहूं जो अपना ।
अच्छा बुरा भी जो हूं, शिव ओम हूं मैं तेरा ॥